

उदयाचल

41वाँ अंक, अप्रैल 2024 - सितम्बर 2024

राजभाषा पत्रिका



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय : प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड, राँची



15 अगस्त, 2024 को प्रधान महालेखाकार द्वारा ध्वजारोहण



गणतंत्र दिवस समारोह 2024



गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम

सेवानिवृत्ति की झलकियाँ





उदयाचल

राजभाषा पत्रिका

41वाँ अंक, अप्रैल 2024 - सितम्बर 2024

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक
श्रीमती इन्दु अग्रवाल
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)

संरक्षक
श्री रौनक रंजन
उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदातृ समिति

श्री जी. रामस्वामी
उप महालेखाकार

श्री सदानंद नस्कर
उप महालेखाकार

श्रीमती माया कुमारी
उप महालेखाकार

संपादक मंडल

श्री शैलेन्द्र नाथ दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

डॉ. मंजेश परासर
हिंदी अधिकारी

श्री शैलेन्द्र कुमार
हिंदी अधिकारी

श्री सुबोध कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री अमर आनंद मिंज
कनिष्ठ अनुवादक

श्री संतोष कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार एवं भावनाएँ हैं।
कार्यालय व संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।



उदयाचल

राजभाषा पत्रिका

41वाँ अंक, अप्रैल 2024 - सितम्बर 2024

स्वत्वाधिकारी

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड, राँची

प्रकाशन

'उदयाचल' (राजभाषा पत्रिका), प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची

अंक

41वाँ

आवरण एवं मुद्रक पत्रिका सज्जा

अन्नपूर्णा प्रेस एण्ड प्रोसेस, राँची

मूल्य

राजभाषा के प्रति निष्ठा

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के निजी विचार हैं जिनसे 'उदयाचल' परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

- संपादक मंडल



मुख्य संरक्षक की कलम से...

मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है कि राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'उदयाचल' के 41वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका हिंदी के प्रति लेखकों की सच्ची निष्ठा का प्रतीक है। इस पत्रिका के द्वारा लेखकों ने अपने विचारों को कहानियों एवं कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त करने का जो प्रयास किया है, वह अत्यंत सराहनीय है।

हमारी राजभाषा हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसे विश्वभर में न केवल सरलता से लिखा जा सकता है, अपितु सहजता से समझा भी जा सकता है, जिससे देश व विदेश के विभिन्न भागों में रहने वाले लोगों में पारस्परिक सद्भावना बढ़ेगी तथा राष्ट्रीय एकता भी सुदृढ़ होगी।

मैं आशा करती हूँ कि कार्यालय के कर्मियों द्वारा रचित इस राजभाषा गृह पत्रिका को सभी पाठकों से प्रेम व सम्मान प्राप्त होगा। मैं यह भी उम्मीद करती हूँ कि हमारे कार्यालय के कर्मियों की प्रतिभा एवं हिंदी के प्रति प्रेम भविष्य में भी 'उदयाचल' की शोभा बढ़ाती रहेगी।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को शुभकामनाएँ देती हूँ।

इन्दु अग्रवाल

इन्दु अग्रवाल
(प्रधान महालेखाकार)



संरक्षक की कलम से...

कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका “उदयाचल” के 41वें अंक को आप सभी बुद्धिजीवी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। कार्यालय में राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए इस पत्रिका का योगदान सराहनीय है। पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ विभागीय कामकाज में भी कार्मिकों को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करती है तथा स्वभाषा में अभिव्यक्ति एवं सृजनशीलता को उन्नत करती है।

यह सर्वविदित है कि राजभाषा में काम-काज करना हमारा न केवल संवैधानिक वरन् नैतिक दायित्व भी है। क्योंकि राजभाषा हिंदी पूरे राष्ट्र को एक धागे में पिरोए हुए है। देश की सभी भाषाएं हिंदी को क्षेत्र और क्षेत्रीयता से परे समृद्ध करती हैं, उन्नत करती हैं, जिससे सशक्त होकर हिंदी वैश्विक स्तर पर हमारे राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करती है।

कार्यालय के लेखकों का राजभाषा के प्रति समर्पण ही पाठकों की संतुष्टि के रूप में प्रकट होता है। मुझे आशा है कि रचनाएं पाठकों के लिए रुचिकर होंगे एवं वे राजभाषा के विभिन्न नए आयामों से परिचित हो पाएंगे।

मेरी ओर से सभी संपादक मंडल, लेखकों एवं इस कार्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े सभी कार्मिकों को सहृदय धन्यवाद एवं शुभकामनाएं।

रौनक रंजन

रौनक रंजन

(उप महालेखाकार/प्रशासन)



प्रधान संपादक की कलम से...

कार्यालय की राजभाषा गृह पत्रिका 'उदयाचल' हमारे कार्यालय के कार्मिकों की राजभाषा के प्रति निष्ठा को प्रदर्शित करती आ रही है। पत्रिका में लेखकों ने लेखों एवं कविताओं के माध्यम से अपनी लेखनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। वर्तमान पत्रिका में पाठकों को रोमांचक लेखों एवं कविताओं के अलावा एक हास्य नाटक के आनंद की अनुभूति का अवसर भी मिलेगा। पत्रिका में रचनाओं की उत्तम गुणवत्ता बनाए रखने का प्रत्येक स्तर पर हर संभव प्रयास किया गया है।

आशा है कि पाठकों को 'उदयाचल' में प्रेषित रचनाएं पसंद आएगी। पत्रिका को और अधिक प्रभावशाली एवं ज्ञानवर्धक बनाने हेतु पाठकगण का बहुमूल्य सुझाव भी सहृदय आमंत्रित है।

सभी रचनाकारों को मेरी ओर से ढेरों शुभकामनाएं।

शैलेंद्र नाथ दास

शैलेंद्र नाथ दास
वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी
(राजभाषा)



संदेश

राजभाषा "हिंदी" हमारे विचारों व अभिव्यक्तियों का प्रमुख माध्यम है। कार्यालय द्वारा हिंदी गृह पत्रिका का सतत् प्रकाशन अत्यंत गौरव का विषय है। कार्यालय की पत्रिका का निरंतर प्रकाशन कार्यालय के कार्मिकों की मुखरता को दर्शाता है तथा हिंदी के प्रति लगाव व प्रेम को भी दर्शाता है। हिंदी हमारी अभिव्यक्ति का सरलतम माध्यम है जो न केवल राष्ट्रीय वरन् वैयक्तिक स्तर पर भी जोड़ने का काम करती है। अपनी भाषा में अभिव्यक्ति केवल विचारों के संप्रेषण का ही कार्य नहीं करती बल्कि भावनात्मक रूप से भी जोड़ती है। इसका एकमात्र कारण है कि यह वह भाषा है जो भारत की सभी भाषाओं को खुद में समेटे हुए है। यह पत्रिका हिंदी के प्रति कार्मिकों की अभिरुचि को दर्शाती है जिनके सहयोग के बिना पत्रिका का प्रकाशन संभव ही नहीं हो पाता। यह पत्रिका उनके हिंदी के प्रति सच्ची निष्ठा और उनके सफल योगदान का प्रतीक है।

'उदयाचल' के 41वें अंक के सफल प्रकाशन हेतु सभी रचनाकारों को हार्दिक शुभकामनाएँ तथा मार्गदर्शन हेतु अधिकारीगण का हार्दिक अभिनंदन।

डॉ. मंजेश परासर
(हिंदी अधिकारी)



संदेश

भारत की स्वतंत्रता में हिंदी की भूमिका सर्वविदित है। हिंदी ने ही पूरे भारत में एक संपर्क भाषा के रूप में जन-जन तक महानुभावों के विचारों को फैलाने में अपने योगदान से एक खूबसूरत स्वतंत्र भारत का निर्माण किया है। शायद यही वजह रही होगी कि भाषाई विविधता के बावजूद भारतीय संविधान के भाग 17 में अनुच्छेद 343 से 351 के अंतर्गत हिंदी को राजभाषा के रूप में स्थान दिया गया।

महात्मा गाँधी ने भी हिंदी को 'हृदय की भाषा' कहा और इस बात की वकालत की कि राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है। इसके अलावा, भारतीय भाषाओं जैसे संस्कृत और हिंदी साहित्य पर शोध करने वाले आयरलैंड के भाषाविद ग्रियर्सन ने हिंदी को "संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि" के रूप में वर्णित किया है।

हिंदी भारत के लगभग सभी राज्यों में बोली एवं समझी जाती है। भारतीय सिनेमा, टेलीविजन तथा आकाशवाणी के व्यापक प्रभाव के कारण आज हिंदी घर-घर तक पहुँच चुकी है। आधुनिक भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार में भारत सरकार के अनेकों सफल प्रयास हुए हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न तरह की प्रोत्साहन योजनाओं द्वारा भी राजभाषा हिंदी की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए प्रयास जारी है। साथ ही, कई तरह के राजभाषा टूल्स जैसे- हिंदी शब्द सिंधु, कंठस्थ 2.0 के माध्यम से भी तकनीकी रूप से इसे सुदृढ़ करने का कार्य बहुत तेजी से हुआ है। इस निरंतर यात्रा में, राजभाषा गृह पत्रिका 'उदयाचल' हिंदी की पहुँच को विविध क्षेत्रों तक बढ़ाने और कर्मियों की साहित्यिक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का प्रयास करता है।

आशा है कि पाठकगण 'उदयाचल' के 41वें अंक की भी सराहना अपने उचित मार्गदर्शन के साथ करेंगे और अपने बहुमूल्य सुझावों से पत्रिका को और बेहतर बनाने में अपना योगदान देंगे।

शैलेन्द्र कुमार
(हिंदी अधिकारी)

अनुक्रमणिका

क्र० सं०	शीर्षक	रचनाकार	पृ० सं०
1	प्राकृतिक चिकित्सा (नेचरोपैथी ट्रीटमेंट): एक परिचय	श्री मनोज कुमार	11-12
2	वृद्धाश्रम में एक माँ की यादें	श्री सदानंद नस्कर	13
3	ओमनी कार	श्रीमती सुनैना कुमारी	14
4	ओड़िशी नृत्य कला	श्रीमती अंकीता कुमारी	15-16
5	प्रेरणा का विचार (प्रेरणा का सफ़र विचारों तक)	श्रीमती राखी कुमारी	17
6	बचाओ जल, बेहतर होगा कल	श्री अमित कुमार रवि	18-19
7	खुद बन जाओ राम	श्री दिलीप कुमार मिश्रा	20
8	मध्यम वर्गीय लड़के	श्री अजीत कुमार तिवारी	21
9	पूजा के फूल	श्री इंद्र कुमार झा	22
10	ज़िन्दगी के सफ़र में	श्री अमर आनन्द मिंज	23
11	भारत की सॉफ्ट पॉवर	सुश्री नेहा कुमारी	24-25
12	भारत में लैंगिक असमानता	श्री सुबोध कुमार	26-27
13	498ए	श्री शैलेंद्र कुमार	28-29
14	संगत का असर	श्री विकास तिवारी	30-31
15	जिओ और जीने दो	श्री बिनोद कुमार प्रभात	32-33
16	युद्ध	श्री शंभू शरण भारती	34
17	अनमोल रिश्ते	सुश्री श्रुति आनंद	35
18	भय से क्षय, रहें निर्भय	श्री इंद्र कुमार झा	36
19	शादी की 25 वीं सालगिरह (हास्य नाटक)	श्री कुंदन कुमार	37

प्राकृतिक चिकित्सा (नेचरोपैथी ट्रीटमेंट): एक परिचय

हमारे देश में कई तरह के चिकित्सा पद्धति प्रचलित हैं। एलोपैथी, आयुर्वेद, होमियोपैथी, यूनानी, सिद्धा, प्राकृतिक चिकित्सा (नेचरोपैथी) आदि सभी पद्धति अपने-अपने आधारभूत तरीके से काम करती हैं, पर कहा जाता है कि धरातल पर जब जीव की उत्पत्ति हुई, तभी प्राकृतिक चिकित्सा का आविर्भाव हुआ। अर्थात् यह एक प्राचीन चिकित्सा पद्धति है, जो वर्तमान में विलुप्त-सा हो गया है और इसे पुनर्जीवित किये जाने की आवश्यकता है।

हमारा शरीर पंचतत्वों से बना है क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा। पंचतत्व से बना शरीर। प्रकृति अर्थात् पंचतत्व स्वयं बहुत बड़े चिकित्सक हैं, जो हमारे शरीर के अन्दर विद्यमान हैं। उदाहरणस्वरूप, जल का अंश श्वास नाली में चला जाय तो उसे निकालने के लिए खाँसी होने लगती है, विषैला अंश पेट में चला जाय तो उसे निकालने के लिए उल्टी होने लगती है, आँखों में धूलकण चला जाय तो उसे निकालने के लिए आँसू आने लगती है, हड्डी टूट जाने पर उसका बँडेज कर देने से हड्डी जुड़ जाती है यह सब प्राकृतिक चिकित्सा ही ती है। परन्तु, जब हमारा खान-पान एवं जीवन शैली ऐसा हो जाय कि शरीर में विजातीय द्रव्य, बैक्टीरिया, वायरस तैयार होने लगे अथवा किसी तत्व की कमी या वृद्धि होने लगे, तो हम रोग ग्रसित हो जाते हैं। इस अवस्था में शरीर के अन्दर विद्यमान चिकित्सक को पंचतत्व के द्वारा उसे ठीक करने में मदद करना ही प्राकृतिक चिकित्सा है, जो शत-प्रतिशत कारगर एवं उपयोगी है।

प्राकृतिक (नेचरोपैथ) चिकित्सकों का मानना है कि जिस प्रकार स्वर्णाभूषणों के टूटने से उसकी मरम्मत सोना से होती है, लोहे के सामानों की मरम्मत लोहे से होती है, कपड़े की मरम्मत कपड़े से ही होती है, ठीक उसी प्रकार शरीर की मरम्मत भी शरीर अर्थात् पंचतत्व से होगी। इसलिए प्राकृतिक चिकित्सा की प्रमुख सामग्री है - क्षिति अर्थात् मिट्टी, जल, पावक अर्थात् अग्नि, गगन अर्थात् आकाश या शून्य



(खाली) स्पेस, समीर अर्थात् हवा। यह सक्ती एवं विश्वसनीय चिकित्सा पद्धति है और इसके प्रमुख उपचार हैं- सूर्यवाष्प स्नान, नस्यपुरण, कल्प उपचार, अग्निहोत्र, प्राकृतिक आहार, जलोपचार। मिट्टी द्वारा उपचार, स्टीमबाथ, रस्मी उपचार, योग निद्रा, सूत्र-नेति उपचार, ठाम्म पाद स्नान, योगासन, जलनेति, कुंजल, फौल लपेट उपचार, कम्बल लपेट उपचार आदि।



श्री मनोज कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी

शिक्षित वर्गों में प्राकृतिक चिकित्सा के नियमों एवं विधियों के प्रति जागरूक किया जाय तो हमारा समाज इसका लाभ अधिक ले सकता है। प्रायः लम्बे समय से दवाओं के सेवन के उपरांत लाभ नहीं मिलने पर औषधियों से निराश रोगी ही इसे अपनाते हैं। ऐसे रोगियों का शरीर यदि मरम्मत के योग्य है, तो उसे जीवन शक्ति जरूर मिलती है। परन्तु, यदि शरीर का प्रमुख अंग क्षीण हो चुका हो, तो उसे ठीक करना संभव नहीं हो पाता है।

पृथ्वी तत्व के अंतर्गत भोजन, आवास एवं अन्य आवश्यक वस्तुएँ आती हैं। इसके प्रमुख घटक मिट्टी है, जिसमें आश्चर्यजनक रोगनाशक गुण हैं। ज्वर के प्रकोप में मिट्टी का लेप या पट्टी का प्रयोग किया जा सकता है। फोड़े, फुंशी, मवाद, खुजली वाले स्थान पर मिट्टी लगाने से विषद्रव्य साफ हो जाते हैं। शरीर में सूजन, तनाव एवं पीड़ा में मिट्टी काफी कारगर होते हैं। सिरदर्द, अनिद्रा, चक्कर, मूर्छा आदि में कपाल पर मिट्टी का लेप या पट्टी से काफी फायदा होता है। बालों के झड़ने, सफ़ेद होने एवं रुसी होने पर तथा आँख आने, रोशनी घटने एवं सूजन होने पर मिट्टी का प्रयोग किया जाना चाहिए, कब्ज, गैस, अल्सर एवं पाचन संबंधी सभी रोगों में पेट पर मिट्टी का प्रयोग करने से लाभ मिलता है। बवासीर, पेचिस, भगँदर आदि में मिट्टी लाभदायक है। मोटापा

संबंधी रोगों में मड बाथ रामबाण है।

जल से जल तत्व की प्राप्ति होती है। शरीर में 70 प्रतिशत जल होता है और बहुत सी क्रियाएँ जैसे - भोजन का पाचन, शरीर की सफाई आदि जल के द्वारा संपादित होती है। औषधि के रूप में जल का गुण है विजातीय द्रव्य को विघटित करके घुलाना, घुले हुए विजातीय द्रव्य को बाहर निकालना, शक्ति एवं स्फूर्ति प्रदान करना। इसका प्रयोग पट्टी, स्नान, भाप, अभिसिंचन (अफ्युजन), प्रक्षालन (एब्ल्युशन), लपेट संवेष्टन (पैकिंग), पेय एवं अभिस्रावित (डिस्टिल्ड) के द्वारा किया जाता है।

सूर्य की किरणों का प्रयोग कर अग्नि तत्व को प्राप्त करते हैं। इन किरणों से रंगों की चिकित्सा की जाती है। भयंकर से भयंकर रोग सूर्य की किरणों से ठीक हो जाते हैं। कहावत है- "Where the Sun does not enter, doctor must!" सूर्य की किरणों से शरीर को विटामिन डी मिलता है, कोलेस्ट्रॉल कम होता है, कैल्सियम, फॉस्फोरस तथा आयरन अवशोषित होता है, विजातीय पदार्थ बाहर निकालकर रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है एवं यकृत, गुर्दे, फेफड़े, हृदय, त्वचा, पाचन अंग, अन्तःस्त्रावी ग्रंथियाँ तथा स्नायु तंत्र को भरपूर पोषण मिलता है।

वायु तत्व जीवन के अस्तित्व को कायम रखने के लिए आवश्यक है। फेफड़े, हृदय, अमाशय सभी को वायु तत्व की जरूरत है। वायु तत्व का सेवन प्राणायाम द्वारा भी किया जाता है। इससे लंग्स को शक्ति मिलती है और ऊर्जा का संचार होता है। जब हम श्वास लेते हैं, तो रक्त साफ़ होता है और फेफड़े में खिंचाव पैदा होता है, श्वास छोड़ते समय फेफड़े से रक्त बाहर निकलता है और नसों में रक्त का परिसंचरण बढ़ जाता है। इसके महत्ता के लिए एक उदाहरण लें, जैसे - बैठते समय और खड़ा होते समय गर्दन सीधी और वक्ष कुछ आगे निकला होना चाहिए। लिखते समय कागज़ और आँख के बीच 35 से.मी. और पढ़ते समय 45 से.मी. की दूरी होनी चाहिए। इससे फेफड़े में पर्याप्त वायु का प्रवाह होता है जबकि झुककर बैठने, चलने से फेफड़े दब जाते हैं, फलस्वरूप श्वास कम लेने से शरीर में ऊर्जा घट जाती है।

आकाश तत्व अनुविहीन तत्व है, जो उपवास (अमाशय को रिक्त रखने) से प्राप्त होता है। चार तत्व शरीर का निर्माण करता है, जबकि पाँचवा तत्व आकाश तत्व शरीर को निर्मल, शुद्ध एवं दीर्घजीवी बनाने के लिए है। उपवास काल के दौरान अपनाए जानेवाले उपचार है एनिमा, भाप-स्नान, कटी-स्नान, पाद-स्नान आदि। इससे अवशिष्ट पदार्थों का निष्कासन कार्य होता है, पाचन तंत्र को आगम मिलता है, लीवर अच्छी तरह से कार्य करता है, रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि होती है और मानसिक शक्ति का विकास होता है।

नेचरोपैथ चिकित्सा का अन्य प्रमुख घटक है आहार चिकित्सा,

योग (प्राणायाम, आसन एवं ध्यान सहित) एवं विचार परिवर्तन।
आहार चिकित्सा - हमारे शरीर का अधिकांश तत्व मिट्टी का बना हुआ है। मिट्टी में आसानी से मिलकर मिट्टी बन जाने वाले भोज्य पदार्थ शरीर के लिए अपेक्षाकृत अधिक लाभदायक होते हैं। स्वस्थ शरीर का 80 प्रतिशत भाग क्षारीय (अलकलाईन) और 20 प्रतिशत भाग अम्लीय (एसीडीक) होता है। शरीर में अम्लता बढ़ने के साथ-साथ बीमारी भी बढ़ती है। शरीर का अम्लीय और क्षारीय होना भोजन पर निर्भर करता है। कच्चा भोजन जैसे फल, सलाद, अंकुरित अनाज, जूस, चटनी आदि क्षारीय होता है। नेचरोपैथ के नजरिये से यह औषधि है जो बीमारी को ठीक करता है, क्योंकि यह मिट्टी में आसानी से मिल जाता है। उबला आहार जैसे सब्जी, चावल, खिचड़ी, दलिया, सूप, खीर आदि भोजन का मुख्य अंश है, जो शरीर को स्वस्थ रखता है। यह भोजन है पर औषधि नहीं। अतः यह बीमारी को ठीक नहीं कर सकता है, परन्तु स्वस्थ व्यक्ति को बीमार नहीं होने देगा। तला हुआ भोज्य पदार्थ जैसे - बिस्किट, पूरी, समोसा, भुजिया आदि अम्लीय भोजन है जो जीभ को स्वाद देता है, परन्तु शरीर को बीमार करता है। अतः इसका सेवन सीमित मात्रा में ही करना चाहिए। अम्लीय भोजन मिट्टी अर्थात् शरीर में बिलकुल ही नहीं मिल पाता है और विजातीय पदार्थ के रूप में पड़ा रहता है।

योग का अर्थ है जोड़ना अर्थात् जीवात्मा और परमात्मा का योग, शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक योग एवं व्यक्ति और समाज का योग। चित्त की वृत्तियों का बाहरी संसार के विषयों में भटकने से रोक कर शांत हो जाना ही योग है। जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य, हर प्रकार के क्लेश, अतृप्ति, वासना आदि पर विजय प्राप्त करके सच्चे सुख शान्ति व आनंद की उपलब्धि प्राप्ति के लिए महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग का राह बताया है यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि, यह ऐसी पद्धति है जिसमें न तो धन खर्च होता है और न ही कोई साधन की आवश्यकता होती है।

विचार परिवर्तन के द्वारा व्यक्ति अपने स्वास्थ्य को उन्नत बना सकता है। संवेदात्मक दबाव विशेषतः क्रोध, चिंता, भय, प्रतिस्पर्धा आदि में शरीर के अन्दर एक विशेष रासायनिक तत्व एकत्रित होने लगता है। ये हमारे शारीरिक विकारों के अदृश्य कारण हैं। अंतःकरण की संकल्प शक्ति को यदि अपनी मनोवांछित दिशा की तरफ मोड़ दिया जाय तो उससे मनचाहा कार्य संपन्न हो सकता है।

अतः यह कह सकते हैं कि प्राकृतिक चिकित्सा के प्रयोग से हमारा जीवन सुखी, आनंदमयी और चिंतामुक्त हो सकता है।



वृद्धाश्रम में एक माँ की यादें

दिन ढलता गया, समय बीतता गया रंगीन ख्यालों में,
 एक स्तर से दूसरे स्तर के आनंद के लहरों में।
 जिंदगी के रंग बन गए बेरंग,
 हुए बेजान, रह गए दंगा।
 जैसे सूखे पत्तों का सैलाब,
 ना डरता, ना करता विलाप।
 खुशी की वे यादें जो थी खामोश,
 अचूक समय के साथ खोते जा रहे होश।
 फिर भी आज दिल में अनजाना सा डर क्यों है?
 ना उसका आना, ना खत, ना आवाज...
 शायद, वह खुशी की यादें भी ना हो जाए नाराज़ ...
 20 नवंबर, मेरे बच्चे का जन्मदिन है खास
 भूल पाना मुश्किल, वह दिन है आज।
 यह दिन क्यों आता हर साल बार-बार,
 वह अनमोल घड़ियाँ याद दिला जाता बार-बार।
 पता नहीं आज क्यों दिल बेचैन हो गया,
 नहीं-नहीं, दिल की सच्ची खुशी चैन ले गया।
 उसे मेरे हाथों के स्वादिष्ट भोजन पर था नाज़,
 इस दिन, मैं अपने हाथों से बनाती उसके लिए पकवान खास,
 सब देते उसे लम्बी उम्र की दुआएँ और मुबारकबाद,
 आज बड़े शहर के बड़े होटल में दोस्तों के साथ,
 शायद सज रही होगी उसकी साज।
 मैं भी अपने को देख रही ढलते उम्र के साथ,
 नहीं पता कल रहूँ या बन कर रह जाऊँ केवल एक याद।
 आज भी, ढलती शाम में,
 छाया और प्रकाश की परस्पर क्रिया में,
 गम और खुशी के खेल में,
 अपने अंतर्मन में झाँकती हूँ,
 इस चकाचौंध घुमावदार दुनिया में भी,
 स्थिर मैं अपने को पाती हूँ,
 बीती यादों को दिल मे सँजोये,
 इंतजार में उसके बैठी हूँ मैं आज...



श्री सदानंद नस्कर
 उप महालेखाकार
 (एएमजी-II)



ओमनी कार

हम 90's के बच्चे उन फिल्मों को देख कर बड़े हुए हैं जिसमें खलनायक, नायक की माँ या बहन या फिर दोनों को अगवा कर काली पहाड़ी पर जाता था और नायक को उन्हें बचाने वहाँ तक मरते-जीते जाना होता था। कभी-कभी नायिका भी अगवा कर ली जाती थी, जिसे छुड़ाने के लिए उसके पिता को अपनी लाखों की जायदाद से हाथ धोना पड़ता था। बच्चे भी अगवा किये जाते, खास कर जुड़वाँ बच्चे, और खलनायक बदला लेने के लिए जेल से भाग कर सीधे जेलर के घर जाता जहाँ उसी दिन जुड़वाँ बच्चे पैदा होते हैं। उसमें से एक को वह उठाता है और ले जाता है अपनी अपराध की दुनियाँ में।

इन सभी उठाव की अलग-अलग परिस्थितियों में एक बात हमेशा समान होती थी और वो थी अगवा के कार्यक्रम में प्रयुक्त होने वाली गाड़ी, 'ओमनी कार'। तो ओमनी कार की इस महत्वपूर्ण प्रयोग को मेरे बाल मन में बहुत बार देखा था (फिल्मों में) और उसने अपने अंदर यह बात बिठा लिया था कि ओमनी कार; मतलब किसी-न-किसी की किडनैपिंग।

पापा की नौकरी के कारण हम अपने गाँव से दूर दूसरे शहर में रहते थे। पर छुट्टियों में हम सब वहाँ जरूर जाते थे। गाँव में मैं, मेरे भाई-बहन और मेरे चचेरे भाई-बहन सब मिलकर खूब धमाचौकड़ी मचाते। हमारे चाचा जी के घर के पीछे दूर तक खेत ही खेत थी जहाँ गर्मियों में खीरा, ककड़ी, टमाटर सब लगे रहते। खेतों से लगकर एक पक्की सड़क गुजरती थी जो आगे जाकर घूम जाती थी और सीधे चाचा जी के घर तक आती थी। हम सारी बहने हमेशा दोपहर के बाद उन खेतों की तरफ घूमने निकल जाया करते। दूर तक पैदल खेतों के किनारों पर चलना बड़ा अच्छा लगता, और जब ज्यादा रोमांच का मन होता तो हम कुछ खीरा, ककड़ी चुराकर भाग जाया करते फिर पीछे होते उंडा लेकर उन खेतों के मालिका। एक बार हम गप्पे लड़ाते-लड़ाते खेतों की तरफ काफी दूर निकल आए। सूरज ढलने को हो आया था। जब एहसास हुआ कि अंधेरा होने वाला है तो हम घर की

तरफ मुड़ गए। घर पर डांट से बचने के लिए हम

जल्दी-जल्दी चल रहे थे। अभी पूरी तरह से अंधेरा नहीं हुआ था। इतनी रोशनी थी जिससे हम पक्की सड़क पर चलने वाली गाड़ियों को देख पा रहे थे। हम थोड़ी दूर ही लौटे होंगे कि हमने देखा सड़क पर तेज गति से सनसनाती हुई एक सफ़ेद ओमनी कार चली आ रही है, अचानक उसमें ब्रेक लगा और जोर की आवाज के साथ वो रुक गई। हमारा बाल मन ओमनी कार देखते के साथ सभी किडनैपिंग के दृश्यों (फिल्मी) को आँखों के सामने ले आया। हमने देखा उस कार से दो लोग

बाहर निकले, उसमें से एक आदमी था और दूसरी एक मोटी सी औरत। दोनों ने एक लड़की या फिर औरत जो भी हो (थोड़े अंधेरे की वजह से कुछ ठीक से दिख नहीं रहा था) को पकड़ रखा था, वो लड़की वहीं बैठ गई तभी एक और आदमी गाड़ी से बाहर आया, उसने चमकीले कपड़े पहन रखे थे। वो शायद उन सबका सरदार था। उसने गाड़ी से कुछ निकाल कर उस मोटी औरत को दिया शायद कोई हथियार, वो लोग उस लड़की को मारने वाले थे। ये सब देखकर हमारी चीख निकल गई। हमलोग चिल्लाते हुए भागने लगे। हमारा चिल्लाना सुनकर वे सब हमारी ही तरफ देखने लगे, हमें लगा अब तो हमारी भी किडनैपिंग तय है। हम सभी पूरी ताकत के साथ घर की तरफ दौड़े। दौड़ने की वजह से मेरी चप्पल टूट गई और मेरे पांव में काँटा भी चुभ गया। मेरे पांव से खून बह रहा था पर उस समय रुकने का अर्थ था अगवा होना, सो हम नहीं रुके। हम गिरते-पड़ते घर पहुँचे तब जाकर हमारे जान में जान आई। घर आकर पहले मेरे पांव की मरहम-पट्टी की गई, नहीं तो बड़ों से डांट पड़ती। थोड़ी देर बात हमें एहसास हुआ कि घर पर तो कोई नहीं है केवल चाची जी है। सबके बारे में पूछने पर पता चला कि सभी पड़ोस में गए हैं, उनके घर नई दुलहन आई है। हम भी नई दुलहन देखने चले गए। वहाँ जाकर हम दंग रह गए, वहाँ तो वही सफ़ेद ओमनी कार थी। पर उसमें से अभी लाल साड़ी पहने दुलहन उतर रही थी साथ चमकीले वस्त्र में दूल्हा भी था जो अपनी माँ को बता रहा था कि दुलहन की तबीयत खराब है, रास्ते भर उल्टियाँ करती आई है। थोड़ी देर पहले भी रास्ते पर रुक कर उल्टियाँ कर रही थी। मेरी सारी बहनें एक-दूसरे को देखकर हँस रही थी और मैं अपने लहलुहान पैर को।



श्रीमती सुनैना कुमारी

(Govt. PGT)

पत्नी श्री राजेश कुमार
वरिष्ठ लेखा परीक्षा
अधिकारी



ओड़िशी नृत्य कला

भारत के पूर्वी तट पर स्थित ओड़िशा मंदिरों की नगरी है, विशेषकर शिव मंदिरों की नगरी, और मंदिरों से प्रेरित ओड़िशी नृत्य वहां की कला संस्कृति को प्रदर्शित करता है। कोई भी देश, राज्य या समाज जब अपनी कला, संस्कृति और साहित्य को जीवंत रखने का निरंतर प्रयास करता रहता है तो वह यह प्रमाण देता है कि समाज की जड़ें जीवंत हैं और इसमें अभी अनेकों नवजात हरे पत्ते लगने की गुंजाइश है। ओड़िशा एक ऐसा ही राज्य है जिसने आधुनिकता की चादर ओढ़े अपनी पौराणिक गतिविधियों को वर्तमान समय तक सजीव रखा है। यह एक ऐसा शहर है जो आधुनिकता और पौराणिकता का संगम है।

ओड़िशा में आपको केवल राजधानी भुवनेश्वर में नहीं, अपितु लगभग सभी जिलों में ओड़िशी नृत्य के प्रति प्यास की झलक दिख जाएगी। राजधानी में तो कई विशेष कला मंडप भवन ओड़िशा की गौरवमयी इतिहास को प्रदर्शित करने को सदैव तैयार रहती हैं। भुवनेश्वर स्थित गुरु केलू चरण महापात्र रिसर्च सेंटर, रविंद्र मंडप, जयदेव भवन, भंज कला मंडप तथा पुरी स्थित अन्नपूर्णा थियेटर इत्यादि में सालों भर ओड़िशी नृत्य के अद्भुत तथा अद्वितीय कार्यक्रम चलते रहते हैं। इनमें कुछ नृत्य तो ऐसे मझे हुए नृत्यांगनाओं द्वारा किए जाते हैं कि उनकी पोशाक, भाव भंगीमा, चेहरे की अभिव्यक्ति एवं शरीर का संतुलन देखकर

आपके रोंगटे खड़े हो जाएंगे। जब मेरे पति का स्थानांतरण राँची से भुवनेश्वर हुआ तो हमें भी रविंद्र मंडप में विभिन्न कलाकारों के माध्यम से इस तरह की सात्विक अभिव्यक्तियों का समागम देखने का मौका मिला। पहली बार आंखों के सामने इन कलाओं को देखकर हृदय में एक अजीब सी ललक उठी। ऐसा लगा कि यह क्या हो रहा है और कैसे हो रहा है? कैसे ये कलाकार इतने संतुलन के साथ इस सुंदर नृत्य को लाइव प्रस्तुत कर पा रहे हैं? यह सिरहन पैदा करने वाला रोमांचकारी दृश्य अद्भुत था। कला के प्रति जरा सी भी रुची रखने वालों के रोम-रोम को भेद देने वाला प्रदर्शन। किसी-किसी नृत्य में तो हिंदू धर्म की कोई पूरी कहानी का वर्णन स्पष्ट हो

जाता है।

एक वर्ष 2018 का वक्त था जब मैं और मेरे पति दर्शक दीर्घा में बैठ कर आश्चर्य के साथ अद्भुत कला का आनंद लेते थे और एक वर्ष 2022 आया जब उस पावन, प्रतिष्ठित मंच पर मेरे पांव में घुंघरू थिरकें। सब महाप्रभू जगन्नाथ की कृपा थी। देखते-देखते लगभग सभी थियोटरों में मेरे परफॉरमेंस होने लगे। रथ यात्रा के दौरान पल्लीश्री मेले में महाप्रभू जगन्नाथ धाम पुरी में भी नृत्य का अवसर मिला। ओड़िशा के लोगों से पता चला कि यह अवसर बहुत कम कलाकारों को मिलता है इसलिए तेज बारिश में भी हमलोगों ने पुरी जा कर नृत्य करने का फैसला लिया। इसके अलावा, उत्कल दिवस पर पुरी स्थित उप महालेखाकार के कार्यालय में भी नृत्य हेतु निमंत्रण मिला जिसे हमने सहर्ष स्वीकार किया और उप महालेखाकार महोदया से खुब सारा स्नेह लेकर मैं गदगद हो गई। इन सभी कार्यक्रमों के दौरान अनेकों राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित अभिभावक रूपी कलाकारों से मिलने का मौका मिला और देखते-देखते राष्ट्रीय चैनल दूरदर्शन पर भी मुख्य कलाकार के रूप में नृत्य का अवसर मिला, जिसका प्रदर्शन 31 दिसंबर 2023 को नव वर्ष के प्रोग्राम के दौरान रात्री में किया गया।

राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रसारण से बेशक एक सुखद अनुभूति हुई क्योंकि इसके दर्शक में आपके नाते रिश्तेदार भी होते हैं जो अपने-अपने घरों में टीवी के सामने आपके नृत्य प्रदर्शन के प्रसारण का बेसब्री से इंतजार करते हैं। प्रसारण के पश्चात मेरी सासू मां ने मुझे फोन किया और उनकी आँखों में खूब सारे अश्रुधाराओं का सैलाब था। दूरदर्शन पर अपने बहू के इस मुग्ध कर देने वाले प्रदर्शन को देखकर उनके इमोशन थम नहीं रहे थे। मुझे लगता है



श्रीमती अंकीता कुमारी
अजय
पत्नी शैलेन्द्र कुमार,
हिंदी अधिकारी





कि इससे ज्यादा संतोषजनक धरती पर और क्या ही हो सकता है।

मूल रूप से झारखण्ड निवासी होने के कारण, ओड़िया भाषा के ज्ञान के बिना, ओड़िया गीतों पर ओड़िशी नृत्य करना और दो वर्ष के दौरान इस स्तर की ख्याति प्राप्त करना किसी स्वप्न से कम नहीं था। मेरा शौक, मेरे पति की लगन और मेरे बच्चे के धैर्य के कारण सबकुछ बस होता चला गया। दशहरे के दौरान नृत्य प्रदर्शन के पश्चात मानपत्र भेंट किया गया जिसमें यूं तो ओड़िया भाषा में लिखावट है परंतु उसके शब्दों को जब मैंने अनुदित किया तो लगा कि इतने सारे प्रशंसा के शब्द मेरे लिए ही लिखे गए हैं। वो मानपत्र आज मेरे लिए एक धरोहर है। यह एक इंटेलेक्चुअल प्रोपर्टी है जो मैंने संजो कर रखा है। मेरी नजर में यह 'मानपत्र' केवल मेरा ही नहीं बल्कि मेरे झारखण्ड का नाम भी रौशन कर रहा है। क्योंकि लोगों को अक्सर कहते सुना था कि आप झारखण्ड से आ कर इतनी विशुद्धता से कैसे ओड़िशी नृत्य कर पा रही हैं? निश्चित तौर पर ओड़िशा में झारखण्ड का नाम तो बढ़ा ही है।

दो वर्ष कोविड के कारण सब कुछ बंद हो गया था जिससे सड़क पर दौड़ने वाले पहियों की तरह मेरे पांव के थिरक की रफ्तार भी थोड़ी धीमी हो गई। कुल मिलाकर ओड़िशा में लगभग दो वर्ष का

ही समय मिल पाया क्योंकि प्रथम डेढ़ वर्ष तो मेरे बालक के जन्म और उसकी प्रारंभिक देखरेख में भी निकल ही गया था। वर्तमान की देखें तो झारखण्ड में स्थानांतरण के पश्चात ही एक प्रोग्राम हेतु मुझे आमंत्रित किया गया, जिसमें मुझे 'झारखण्ड सेवा सम्मान' से नमाजा गया। मुझे उम्मीद है कि महाप्रभू जगन्नाथ द्वारा प्रदत्त इस पावन नृत्य के माध्यम से मैं झारखण्ड का नाम विश्व पटल पर भी रख पाऊंगी। इसके लिए आप सभी प्रबुद्ध पाठकों एवं स्वजनों से आशीर्वाद की कामना करती हूँ।

ओड़िशी नृत्य में यूं तो बहुत सारी विस्तृत बातें हैं परंतु मुख्य रूप से दो मूल मुद्राएं हैं- चौक एवं त्रिभंग। चौक से तात्पर्य है चौकोर जिसमें नर्तकी केंद्रीय धुरी के एक ओर से दूसरी ओर तक अपने शारीरिक भार का समान रूप से विभाजन के साथ शरीर को झुकाती हैं। घुटने बाहर की ओर मुड़े होते हैं, हाथ फैले हुए तथा आगे से शरीर अंतराल में एक आयताकार या चौकोर के रूप में प्रदर्शित होता है। जबकि त्रिभंग मुद्रा में शरीर को तीन मोड़ों अर्थात् सिर, धड़ एवं नितंबों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। इसमें सिर तथा गला एक दिशा में जबकि धड़ तथा नितंब विपरीत दिशा में प्रदर्शित की जाती है।

ओड़िशी नृत्य में 'श्रृंगार' और 'दर्पण भंगी' का भी एक विशेष स्थान है जिसमें नर्तकियों की श्रृंगार करती हुई मुद्राएं- जैसे अपने शरीर, कपड़े तथा आभूषण द्वारा श्रृंगार करते हुए तथा इसके पश्चात दर्पण में अपने आप को निहारती हुई मुद्राएं भी हैं।

भारत की किसी भी शास्त्रीय नृत्य में हस्त मुद्राओं का भी एक विशेष स्थान होता है। हस्त मुद्राएं एक सांकेतिक भाषा हैं जिसके द्वारा विचारों, प्रतीकों एवं भावनाओं को व्यक्त किया जाता है। हस्त मुद्राओं की इस कला को 'हस्ता' कहते हैं। जहां तक मेरी जानकारी है, ओड़िशी सांकेतिक भाषा को दो ग्रंथों 'अभिनय दर्पण' तथा 'अभिनय चंद्रिका' से लिया जाता है।

ओड़िशी नृत्य का पाठ्यक्रम बहुत ही विस्तृत है और सभी बिंदुओं को यहां रखना संभव नहीं है।

अतः मैं अपने शब्दों को विराम देते हुए अंततः यही कहना चाहूंगी कि यूं तो बहुत सारे समाज में नृत्य के मामले में विशेषकर स्त्रियों को जाने की अनुमति नहीं मिलती है परंतु यदि आपको किसी भी कला के क्षेत्र में जरा सी भी रुची है तो निसंदेह आप उस ज्ञान को अर्जित करने हेतु अपने अंदर की ज्वाला को बनाए रखें। नृत्य भी साहित्य पढ़ने जैसा ही है बल्कि इसमें तो हम अभिनय के माध्यम से साहित्य को ही प्रदर्शित करते हैं। मैंने भी समाज के कई तंज झेले हैं और लोगों को तरह-तरह की बातें कहते सुना है परंतु आज कहने वालों को वहीं का वहीं देखा है और अपने आप को उनसे बहुत आगे।

धन्यवाद।



प्रेरणा का विचार (प्रेरणा का सफ़र विचारों तक)

पिछले अंक में हमने देखा कि अगर बच्चे कुछ कर रहे होते हैं, जैसे कि मोबाईल या टी.वी. में व्यस्त हैं, कहीं बात कर रहे हैं या घर पर अकेले हैं; तो ऐसे में तुरंत की गयी प्रतिक्रिया (प्रत्यक्षीकरण) यदि नकारात्मक हो तो बच्चों में यह अविश्वास की भावना को बढ़ाती है। अतः पूरी वस्तुस्थिति को समझकर उसमें भी उसके सकारात्मक पहलुओं पर बात करके उसके व्यवहार के प्रति समझदारी विकसित करने का प्रयास करें, तो फिर वह वैसा ही करता है जैसा हम चाहते हैं। अर्थात् हम समझ पाए कि प्रतिक्रियाओं का प्रभाव मानसिकता पर कैसे पड़ता है, कैसे एक परिस्थिति कई विचारों को जन्म देती है, हमारी प्रतिक्रिया क्या होती है और उससे हमें कैसे निपटना चाहिए।

इस अंक में इसे ही आगे ले जाते हुए बात करते हैं कि प्रेरणा, विचारों को ऊँचे पायदान पर कैसे ले जाती है।

आज हमारे अभिभावक अपने विचारों के उलझन में इस कदर उलझे रहते हैं कि उनके जीवन में नकारात्मक प्रेरणा अपना डेरा जमा कर बैठ जाती है। अभिभावक ही क्यों, आप जहाँ भी जाइए, चाहे वह रेलवे स्टेशन पर खेलता बच्चा, ऑफिस में बैठा अधिकारी, घर में खाना बनाती गृहिणी, रोड पर चलता इंसान, छोटा से छोटा और बड़ा से बड़ा अधिकारी भी विचारों में उलझकर नकारात्मक प्रेरणा से प्रभावित हो जाते हैं और गलत निर्णय ले लेते हैं।

अभिभावक अपने बच्चों से कहते हैं कि "देखो बेटे! कोई गलती नहीं करना, तुम्हें कितना मानता हूँ, तुम्हारी हर ख्वाहिशों को पूरा करता हूँ।" दूसरी तरफ, बच्चे अपनी अभिभावक की बातों को ध्यान में रखकर अपनी पढ़ाई और काम पर

ध्यान देते हैं। साथ ही वे दोस्तों और समाज के संसर्ग में आते हैं। धीरे-धीरे वे घुलने-मिलने लगते हैं। एक समय ऐसा आता है, जब उन्हें पता ही नहीं चलता है कि दोस्ती निभाते-निभाते कहाँ पहुँच गये हैं और क्या गलती कर बैठे हैं। कभी-कभी गलती इतनी बड़ी हो जाती है कि वे अपने परिवार को बताने में डरते हैं कि कहीं हम बता देंगे तो मेरा परिवार बिखर जाएगा। पापा, जो मेरी हर ख्वाहिशों को पूरा करने को लेकर संवेदनशील रहते हैं, हम पर विश्वास करना छोड़ देंगे।



दूसरी तरफ, अभिभावक को पता चलता है कि मेरे बेटे से गलती नहीं गुनाह हुआ है। वे अपने बेटे की गलती को माफ नहीं कर पाते हैं और यह निर्णय लेते हैं कि "अब बहुत हो गया, न इसे पढ़ाना है और न लिखाना है, अब सिर्फ काम कराना है। बहुत कुछ कराने का सोचा था अब बिलकुल नहीं।"

उपर्युक्त तथ्यों में दो पक्ष हैं: पहला "वह बच्चा, जो अपनी पापा की संवेदनशीलता को देखते हुए अनजाने में हुई गलती को बताना नहीं चाहता है।" दूसरा - "वह अभिभावक, जो अपने बच्चे की गलती को नकारात्मक विचारों की प्रेरणा से प्रभावित होकर गलत निर्णय ले रहे हैं।"

प्रश्न यह है कि गलत कौन है? वह बच्चा, जो अभिभावक का ध्यान रख रहा है या अभिभावक, जो यह निर्णय ले रहा है।

वास्तविकता ये है कि दोनों अपने विचारों की प्रेरणा से प्रेरित हैं। अभिभावक को ऐसा महसूस हो रहा है कि जिस बच्चे को मैंने पढ़ाया लिखाया, इतना प्रेम किया, उसने ऐसा क्यों किया, या उसने ऐसा भी किया। एक बार भी अपनी बातें शेयर नहीं की। आज इसकी वजह से समाज तरह-तरह की बातें कर रहा है। शायद. वे समझ नहीं पा रहे हैं कि बच्चे से अनजाने में गलती हुई और वह हमारे लिए ही चुप रह रहा, तो क्या इस तरह का निर्णय लेकर बच्चों के जीवन में नकारात्मक परिवर्तन लाना नहीं हुआ?

समझना ये है कि "किस तरह से ऐसी परिस्थितियों में संवादों को प्रभावी बनाया जाए, जिससे ऐसी स्थितियाँ नहीं आए और नकारात्मक विचारों की प्रेरणा से प्रभावित न हो और हर परिस्थिति में वह खुलकर बात करें, और कैसी भी परिस्थितियाँ हो हर स्थिति को अपने परिवार से शेयर करें।

बच्चा

उपर्युक्त तथ्यों पर सभी विचार करें..... ??????

आगे संवाद जारी है-



बचाओ जल, बेहतर होगा कल

कर लो अपने मन में निश्चय, करना है जल का संचय।

पृथ्वी पर उपलब्ध एक बहुमूल्य संसाधन है जल, या यूँ कहें कि यही सभी सजीवों के जीने का आधार है। हम हमेशा से सुनते आये हैं “जल ही जीवन है”। फिर भी इसकी कीमत नहीं समझते और व्यर्थ ही बहाते हैं।

हम सभी जानते हैं कि धरती का लगभग तीन चौथाई भाग जल से घिरा हुआ है, किन्तु इसमें से 97% पानी खारा है जो पीने योग्य नहीं है, पीने योग्य पानी की मात्रा सिर्फ 3% है। इसमें भी 2% पानी ग्लेशियर एवं बर्फ के रूप में है। इस प्रकार सही मायने में मात्र 1% पानी ही मानव के उपयोग हेतु उपलब्ध है। फिर भी हमलोग बेफिक्र होकर पानी को बर्बाद करते हैं।

“जल है तो कल है” जल के बिना सुनहरे कल की कल्पना नहीं की जा सकती, जीवन के सभी कार्यों का निष्पादन करने के लिये जल की आवश्यकता होती है।

लेकिन नगरीकरण और औद्योगिकीकरण की तीव्र गति व बढ़ते प्रदूषण तथा जनसंख्या में लगातार वृद्धि के साथ प्रत्येक व्यक्ति के लिए पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करना एक बड़ी चुनौती बनती जा रही है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ रही है देश के कई हिस्सों में पानी की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। प्रतिवर्ष यह समस्या पहले के मुकाबले और बढ़ती जाती है, लेकिन हम हमेशा यही सोचते हैं बस जैसे-तैसे गर्मी का मौसम निकल जाये। बारिश आते ही पानी की समस्या दूर हो जायेगी और यह सोचकर जल संरक्षण के प्रति बेरुखी अपनाये रहते हैं। हम सभी जानते हैं कि “जल है तो हम हैं अन्यथा हम नहीं”। लेकिन कुछ लोगों के लिए ये केवल एक वाक्य है जिसे वे लिखा देखते हैं, सुनते हैं, पर जल संरक्षण की बात से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। पानी उनके लिए बह जाने के लिए ही है तभी तो घंटों पाइप लेकर पानी बहाते हैं। गाड़ियां धोते हैं और नल खुला छोड़ देते हैं। आज संकट की स्थिति उत्पन्न होने लगी है। वरदान रूप में प्राप्त पानी जो हमें प्रकृति से मुफ्त मिला था आज बंद बोटलों में बिकने लगा है। लोगों को पानी की कमी को महसूस करके देखना चाहिए, जिंदगी कैसी वीरान लगने लगती है। सारी खुशियां फीकी पड़ जाती हैं। पानी की कमी से लोग जिन्दगी जीना भूल जाते हैं। पानी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है और इसके जिम्मेदार कहीं ना कहीं हम ही हैं जो या तो इसे व्यर्थ बहाते हैं या प्रदूषित करते हैं।

हमारा भविष्य क्या होगा यदि हमने जल की कीमत नहीं समझी? भविष्य में घोर जल संकट की स्थिति उत्पन्न हो, इससे बचने के लिए आज और अभी से जागरुक होने की आवश्यकता है। जल की कमी से जूझने पर हमें उसके मूल्यवान होने का पता चलता है। हम उसे व्यर्थ ही बहाते हैं। सीमित जल से काम हो सकता है पर बाल्टियों बहाते हैं। हमारी लापरवाही की वजह से पानी दिन-प्रतिदिन कम हो रहा है। नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) के अनुसार भारत में रोज 48.41 अरब लीटर पानी बर्बाद होता है। जबकि 60 करोड़ लोग जल संकट से जूझ रहे हैं। अपने दैनिक जीवन में हम यदि छोटी-छोटी बातों से ही प्रेरणा लेकर पानी बचाएंगे तो भी ये हमारे लिए जल संरक्षण की तरफ बढ़ता हुआ एक कदम होगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि जल-संकट का समाधान जल के संरक्षण से ही है। इसलिए आज और अभी से पानी बचाने के लिए नई आदतों को अपनायें। आइए आज उन छोटे-छोटे तरीकों एवं आदतों को जानते हैं, जिनकी मदद से पानी का संरक्षण कर सकते हैं :-



श्री अमित कुमार रवि
सहायक लेखापरीक्षा
अधिकारी

- (i) **RO (Reverse Osmosis) प्यूरीफायर से निकलने वाले पानी को संग्रह करना :** वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम के अनुसार एक RO प्यूरीफायर एक लीटर पानी शुद्ध करने में तीन लीटर पानी वेस्ट के रूप में निकालता है। यानी एक दिन में RO प्यूरीफायर से आपके घर में 15 लीटर पानी शुद्ध होकर आता है तो 45 लीटर पानी वेस्ट के रूप में निकलता है जो आमतौर पर सीवेज नालियों में बह जाता है। यदि आप इसे संग्रह करते हैं तो एक दिन में आप केवल RO प्यूरीफायर से ही 45 लीटर पानी बचा सकते हैं, इस प्रकार एक माह में 1350 लीटर, एक वर्ष में 16,425 लीटर पानी बचा सकते हैं। जिसका उपयोग आप कपड़ा, कार, बाइक, धोने में एवं गार्डन इत्यादि में डालने के लिए कर सकते हैं।

(ii)

हाथ धोते, ब्रश एवं शेविंग के दौरान नल को बंद

रखना : अक्सर देखा जाता

है कि हाथ धोने समय लोग नल खोलते हैं, हैंडवाश/साबुन लेते हैं और दोनों हाथों को रगड़ते हैं, इस

दौरान नल खुला ही छोड़ देते हैं, और पानी व्यर्थ बहता रहता है। यदि हैंडवाश/साबुन लेने के बाद नल को बंद कर दिया जाए और हाथ को रगड़ने के उपरांत नल खोल कर हाथ धोया जाए तो व्यर्थ बहने वाले पानी को बचाया जा सकता है। साथ ही अगर हम इस काम के लिए लोटा या मग का प्रयोग करें, तो महज एक लीटर से भी कम पानी में हमारा काम चल सकता है, या सेंसर युक्त नल लगाकर भी पानी को बचाया जा सकता है। साथ ही देखा जाता है लोग ब्रश एवं सेविंग के दौरान भी नल को खुला छोड़ देते हैं, अगर इन दोनों कामों के दौरान भी नल को बंद रखने की आदत डाल लें तो रोज पानी को बचाया जा सकता है।

(iii) **जितना पानी पीना है उतना ही गिलास में लें:** लोगों की आदत होती है कि गिलास भर के पानी लेते हैं और कुछ घूंट पीकर छोड़ देते हैं, जिससे बहुत सारा पानी व्यर्थ ही बर्बाद हो जाता है। अतः जितना पानी पीना है उतना ही गिलास में पानी लें।

(iv) **कार धोते वक्त पाइप के उपयोग से बचना :** सिर्फ एक बार आप कार को धोने के लिए पानी के पाइप की जगह बाल्टी और एक स्पंज प्रयोग करके देखें। इससे कितनी बड़ी मात्रा में पानी को बचाया जा सकता है। इसका अंदाजा आप खुद लगा सकते हैं।

(v) **सही समय पर बर्तन धोना :** अक्सर हम पेय पदार्थ पीने के बाद कप या गिलास को सिंक में छोड़ देते हैं अगर इन्हें तुरंत साफ कर दिया जाए तो लगभग 50 प्रतिशत तक पानी को बचाया जा सकता है। यह प्रक्रिया खाना खाने के बाद थाली, प्लेट एवं गिलास इत्यादि के लिए भी अपनाकर पानी को बचाया जा सकता है।

(vi) **शावर, टब की जगह बाल्टी से स्नान करना :** यदि स्नान 'बाल्टी' में पानी लेकर किया जाए तो शावर, टब में नहाने की तुलना में अधिक जल बचाया जा सकता है। साथ ही देखा जाता है कि नहाने के दौरान यदि पहले से बाल्टी में पानी बचा हुआ रहता है तो इसे बहा दिया जाता है। यदि इस पानी को किसी और बाल्टी में संग्रह किया जाए तो बड़ी मात्रा में पानी बचाया जा सकता है। जिसका उपयोग बहुत सारे कार्यों के लिए किया जा सकता है।

(vii) **वॉशिंग मशीन में एकसाथ कपड़े धोना :** आमतौर पर हम 2-4 कपड़ों को धुलने के लिए भी वॉशिंग मशीन का प्रयोग करने से नहीं चूकते। यदि हम तब तक अपने कपड़े न धुले, जब तक वह पूरी तरह से भरी न हो तो ऐसा करने से बड़ी मात्रा में पानी बचाया जा सकता है।

(viii) **सब्जी को धोने से निकलने वाले पानी का उपयोग करना :** सब्जी धोने के बाद बचे हुए पानी का उपयोग

पौधों के लिए किया जा सकता है।

(ix) **पानी टैंक में वॉटर टैंक अलार्म लगाकर :** कई बार ऐसा होता है कि पानी टैंक में भर जाता है और पता भी नहीं चलता है और पानी बहता रहता है। इस प्रकार बहुत मात्रा में पानी बर्बाद हो जाता है। इसके बचाव के लिए या तो वॉटर टैंक अलार्म पानी टैंक में लगावाएँ या बहते हुए पानी को संग्रह करें। ऐसा करने से बड़ी मात्रा में पानी बचाया जा सकता है।

(x) **नल से पानी की लीकेज को बंद करके :** अक्सर देखा जाता है कि नल से बूंद-बूंद कर पानी टपकते रहता है जिससे बहुत सारा पानी व्यर्थ ही बह जाता है। नल से पानी की लीकेज को बंद कर व्यर्थ में बर्बाद हो रहे पानी को बचाया जा सकता है।

आपलोगों ने कभी महसूस किया होगा कि जिस दिन घर पर पानी की कमी होती है उस दिन बहुत ही सावधानी से पानी



को खर्च किया जाता है। उस दिन सभी कार्य और दिनों की तुलना काफी कम पानी में ही अच्छे से कर लिया जाता है। जैसे स्नान दो बाल्टी की जगह एक बाल्टी से ही अच्छे से कर लिया जाता है। आखिर ऐसा क्यों होता, इसके पीछे कहीं न कहीं हमारी लापरवाही एवं अज्ञानता है। यदि घर के कार्य को क्रमवार तरीके से किया जाए यानि ये सोच कर किया जाए कि कौन से कार्य को पहले करें जिससे बचे हुए पानी को दूसरे कार्य में उपयोग किया जा सके तो बहुत मात्रा में पानी को बचाया जा सकता है। हमलोगों को हर समय ये मानकर पानी को खर्च करना चाहिए कि पानी हमलोगों के पास बहुत कम मात्रा में बचा हुआ है।

अबतक मैंने, आपलोगों ने भी महसूस किया होगा कि मुफ्त में उपलब्ध वस्तु का उपयोग मानवजाति द्वारा बिना कुछ सोचे समझे किया जाता है ये आदत बनी हुई है कि एक की जगह दो, दो की जगह तीन.... उपयोग की जाती है।

यहाँ पानी का ही उदाहरण लेते हैं जब आप एक पानी का बोतल खरीदते हैं तो उसको आप कैसे खर्च करते हैं और एक मुफ्त का पानी का बोतल मिलता है तो आप कैसे खर्च करते हैं। ये सवाल विचारणीय है जिसे अपने दैनिक जीवन में उतारने की जरूरत है।



खुद बन जाओ राम

राम नाम तो लोग जपत हैं, राम सा काम करे क्या कोई?
राम सा काम करे जो कोई, राम भक्त, राम ही वो ही।

जय जय राम, जय सिया राम,

दो अक्षर का प्यारा नाम, पतित पावन सीता राम,
जय जय राम, जय सिया राम ॥

मन में तेरे राम बसो है, कर्मण में फिर क्यों नहीं राम?
जय जय राम, जय सिया राम, जय सिया राम।

नाम जपन तो ठीक है बंदे, कर्मण में अपना लो राम,
जय जय राम, जय सिया राम ॥

कालनेमि सा नाम जपत हो, राम कहाँ से पाओगे,
तप हो माई सबरी जैसा, राम प्रभु खुद आएंगे,
जय जय राम, जय सिया राम, जय सिया राम ॥

राम राज्य की स्वपन दिवा क्यों?

तुम खुद ही बन जाओ राम।
मनसा, वाचा, कर्मणा से, बन जाओ तुम राम-राम,
राम राम, राम राम ॥



श्री दिलीप कुमार मिश्रा
सहायक लेखापरीक्षा
अधिकारी



मध्यम वर्गीय लड़के

मध्यम वर्गीय लड़के जो घर से निकलते तो हैं खुद के सपने लेकर लेकिन समय की मार के आगे घुटने टेक कर वह अपनों के सपने पूरे करने में लग जाते हैं हालांकि कुछ लड़के अपनों के सपनों के लिए भी घर से निकलते हैं, लेकिन उन सपनों को पूरा करते-करते वे खुद को खो देते हैं। वे अपना लड़कपन खो देते हैं, उन्हें भी घर की याद आती है लेकिन वे रोते नहीं हैं क्योंकि लड़के रोते नहीं हैं।

मध्यम वर्गीय लड़के, जो की बड़े बाल और बड़ी दाढ़ी में खुद को छुपा लेते हैं लेकिन धीरे-धीरे हमारे बाल और दाढ़ी भी हमारे सपनों की तरह हमारा साथ छोड़ने लगती है। धीरे-धीरे वह भी पकने लगती है, मध्यम वर्गीय लड़के, जो किताबों में खो गए हैं जो मशीनों के नीचे सो गए हैं जो कंप्यूटर के आगे रो रहे हैं जो फाइलों में खुद को खो रहे हैं, फिर भी जिंदगी से मिलते वक्त वह मुस्कराते हैं, गुनगुनाते हैं और दुनिया की नजर में वे लड़के बेपरवाह बन जाते हैं।

मध्यम वर्गीय लड़के, जिनके सपनों में खुद के लिए सपने नहीं होते हैं जो दौड़ते हैं लंबी रेस में, जो उनकी खुद की रेस कभी नहीं होती, ऐसे लड़कों का सपना तो महज इतना सा ही था कि

अपने दोस्त की सेकंड हैंड स्प्लेंडर की पिछली सीट पर अपनी महबूबा को बैठाकर बाइक चला सकें, जिनके लिए बाइक मोटरसाइकिल होती थी। महबूबा को भी मोटरसाइकिल पर बस इसलिए बैठाना था ताकि साइड मिरर से बार-बार अपनी महबूबा के उड़ते हुए बालों को देख सकें, उनका सपना सेकंड हैंड स्प्लेंडर ही था। लेकिन खुद को खुद से मिलाते मिलाते हम खुद से बहुत दूर चले जाते हैं। मध्यम वर्गीय लड़के जो खुद के लिए जीने से पहले दूसरों के लिए जीना चाहते हैं।

हम मध्यम वर्ग के लड़के जो हाथों में फाइलें चिपकाए, दिमाग को काम में लगाए, कंप्यूटर पर नज़रे टिकाए अपने परिवार, शहर/गांव अपने माटी से ना जाने कितनी दूर मुस्कुराने की झूठी कोशिश में मुस्कुरा रहे हैं। हां हम मध्यम वर्गीय लड़के।



श्री अजीत कुमार
तिवारी
सहायक लेखापरीक्षा
अधिकारी



पूजा के फूल

सुधा के पति अच्छे पद पर थे। उन्हें नौकरी में दौरे पर अक्सर जाना पड़ता था। सुधा का केवल एक ही बच्चा था जो पास ही एक अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता था। पति के दौरे पर रहने के समय सुधा ही उसे स्कूटी से स्कूल आना-जाना कराती थी। रमा सुधा के यहां कामवाली थी। एक बार सुधा जब अपने बेटे को स्कूल से घर ला रही थी तो फिसलन के चलते स्कूटी से गिर गयी। संयोगवश रमा वहां से गुजर रही थी। उसने सुधा और उसके बेटे को उठाया और बगल वाले दुकानदार की मदद से उसकी स्कूटी को अपने यहां रखवा दिया और सुधा तथा उसके बेटे को अपने घर पर सहारा देकर ले आई क्योंकि उसका घर पास में ही था। घर आते ही रमा ने अपनी बेटी को सौ रुपए देकर दूध, बेंडेज, डिटॉल लाने भेज दिया और नई साड़ी जो उसने पूजा के लिए रखे थे उसे निकाल कर सुधा को कपड़े बदल लेने के लिए कहा। साथ ही नई चादर बिछाकर सुधा और उसके बेटे को आराम करने के लिए कहा। उसके बेटे को तो संयोगवश बहुत हल्की खरोंच आई थी पर सुधा के जख्मों पर रमा अपनी बेटी के द्वारा लाये डिटॉल से साफ कर उसपर बेंडेज लगा दिया था। इस बीच रमा की बेटी ने सुधा और उसके बेटे के लिए नाश्ता भी तैयार कर लिया था। सुधा गहरी आत्मचिंतन में थी और मारे पश्चाताप के आंखें नम हुई जा रही थी। उसे रमा के प्रति किये गये अपने व्यवहार की याद आ रही थी। जब वह अपने बच्चों को लेकर आती थी तो नाक भों सिकोड़ते हुए उसे घर से बाहर ही रहने की ताकीद करती थी। एक बार उसके बच्चे सोफा पर क्या बैठ गये, उसने खासा हंगामा खड़ा कर दिया था कि तुम लोगों के बच्चे कितने गन्दे रहते हैं, बीमारी हो जाएगी। उसने उसके बेटे से पढ़ाई के बारे में पूछा तो रमा ने कहा कि उसे किताब, कॉपी, ड्रेस और फीस के पैसे नहीं रहने के कारण अगले क्लास में प्रवेश नहीं मिला क्योंकि जो भी पैसे थे वो पति के इलाज में खर्च हो गये थे। उसे याद आया कि रमा जब-जब बच्चे की पढ़ाई या पति के इलाज के लिए पैसे मांगती तो वह झिड़क दिया करती थी कि तुम लोग बच्चे को ही क्यों जन्म देती हो। जब रमा ने कहा, “दीदी, आप दो-चार दिन आराम करिएगा और मैं आपके यहां खाना बना दिया करूंगी। सुधा को तो रमा के प्रति कहे गये एक-एक शब्द शूल की तरह चुभ रहे थे। उसने रमा के घर का अच्छे से मुआयना कर लिया। उसने रमा से जाने की अनुमति मांगी और साड़ी नहीं देने की बात कही। उसने रमा के पति का हाल लिया तो पता चला कि उसे अच्छे डॉक्टर से दिखाने की जरूरत है जिसके लिए रमा के पास पैसे नहीं थे। दो घंटे बाद जब सुधा अपने घर गयी तो फोन पर अपने पति को अपना हाल सुनाया। उसका पति दूसरे ही दिन दौरे से वापस आ

गया। उसने अपने पति से कह रमा के पति के लिए अच्छे डॉक्टर के यहां नंबर लगा दिया और रमा के बेटे के लिए स्कूल का ड्रेस, किताबें, कॉपी और उसके घर के लिए बहुत सी जरूरत की चीजें लेकर रमा के घर अपने पति के साथ पहुँच गयी। अचानक सुधा और उसके पति को अपने घर आया देखकर रमा सकपका गयी और बोली, “साहब और दीदी, आप दोनों मेरे घर पर!” सुधा रमा से बोली कि मेरा अपना कोई भाई नहीं है और तुम्हारे पति को मैं आज से अपना भाई मान रही हूँ। आज से उसके इलाज की सारी जिम्मेदारी मेरी और मैंने अच्छे डॉक्टर के यहां उनका नंबर भी लगवा दिया है। आज चार बजे का नंबर है और मैं और मेरे पति आज आकर इन्हें डॉक्टर के पास दिखाने ले जायेंगे। रमा आज से तुम मुझे छोटी बहन ही समझना। ये तुम्हारे बेटे की ड्रेस, किताबें और कॉपियाँ हैं और कल से यह स्कूल जाएगा क्योंकि इस बारे में मैंने शिक्षक से बात भी कर ली है। रहा ये सब सामान तो यह मेरे तरफ से अपने भाई और तुम्हारे लिए उपहार है। आज से तुम्हारे बच्चे मेरे घर बराबर आना-जाना करेंगे ताकि मैं उनका हाल देख सकूँ और आज से तुम्हारी पगार मैं दुगुनी कर रही हूँ। रमा ने जब सामान लेने के बारे में कुछ आनाकानी की तो सुधा फफक पड़ी। उसने कहा, “बहन रमा, मुझे मत रोको, मैंने अपनी अंतरात्मा की आवाज सुन ली है। मुझे तुम्हारे साथ किये गये अपने व्यवहार पर बहुत पछतावा है। मेरे व्यवहार और तुम्हारे प्रति कहे गये एक-एक शब्द शूल की तरह चुभ रहे हैं। तुम्हारी दी हुई वह साड़ी जो तुम्हारे पास सिर्फ एक ही थी, तुमने उसकी परवाह नहीं की और मुझे पहनने के लिए दी, यह मेरे लिए पूजा के फूल बन गये हैं”। अब सुधा और रमा दोनों गले मिल रही थी।

इसका संदेश यह है कि बाजी जब पलटती है तो राजा रंक सब एक हो जाते हैं। हमें दूसरों से वही व्यवहार करना चाहिए जो हम उससे अपने लिए चाहते हैं। कभी किसी के पेशे, रूप-रंग, आर्थिक स्थिति या किसी अन्य बात के लिये किसी को तुच्छ नहीं समझना चाहिए। हो सकता है हमने कुछ अच्छे कर्म किए हों जो आज हम अच्छी स्थिति में हैं किन्तु अच्छे कर्म नहीं करने पर अगले जन्म क्या इसी जन्म में परिणाम भोगने पड़ सकते हैं।



श्री इंद्र कुमार झा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी

ज़िन्दगी के सफ़र में

जुलाई महीने के प्रथम शनिवार को माँ के बचत खाता बही को अपडेट करने के लिए सुबह 10 बजे ही मैं गोल चक्कर, धुर्वा के पास स्थित बैंक पहुँच गया। बैंक में उस दिन कुछ ज्यादा ही लोग आए हुए थे। उन्हीं अपरिचित लोगों के बीच मुझे एक परिचित चेहरा दिखा। तभी मुझे ऐसा लगा मानो मैं उस व्यक्ति को पहले से जानता हूँ, लेकिन मैं उन्हें पहचान नहीं पा रहा था। दिखने में वे काफी सरल स्वभाव के लग रहे थे। कुछ टॉके उनके टूटे-फटे जूते को मजबूती से जकड़े हुए थे और शर्ट और पैंट काफी साफ-सुथरे एवं बेल्ट से कसे हुए थे। ऐसा लग रहा था जैसे जिम्मेदारी और उम्र के बोझ तले उनकी रीढ़ की हड्डी झुक गई हो। कपकपाते हाथ में कलम पकड़े हुए बड़े मोटे चश्मे से एक पेपर को बार-बार देख रहे थे। अब मैं भी वहां पहुंचकर उनके साथ उस पेपर को देखने लगा। उस पर खाता बंद करने का आवेदन पत्र अंग्रेजी में लिखा हुआ था और अंतिम में 'गिरि' लिखकर हस्ताक्षर किया हुआ था। अब जाकर याद आया मुझे। यह तो गिरिराज सर है। हाई स्कूल में संस्कृत और हिंदी पढ़ाते थे। मैंने उनसे पूछा, "कुछ दिक्कत है क्या? मैं मदद करूँ! सर, आप पहचाने हमको? यह कहकर मैंने उनके पैर छुए। "आप संस्कृत और हिंदी पढ़ाते थे प्रभात तारा उच्च विद्यालय में!" लेकिन वे अभी भी बार बार अपने आवेदन पत्र को ही देख रहे थे। पत्र में लिखा हुआ था कि उनकी पत्नी काफी समय से बीमार चल रही थी और उनकी मृत्यु हो जाने के कारण वे अपना खाता जॉइंट से सामान्य खाते में बदलना चाहते हैं। तभी एक बात याद आई कि सर का रिश्ता केवल हिंदी और संस्कृत के कविता, दोहे, कहानियां, उपन्यास, श्लोक इत्यादि से था। अंग्रेजी से उनका हमेशा ही विरोधाभास रहता था। स्वदेशी भाषा और संस्कृत से उनका प्रेम इस बात से ही लगाया जा सकता था कि वे खादी वस्त्र धारण कर, माथे में चंदन का तिलक लगाकर, सूचना पट्ट में संस्कृत में श्लोक लिखकर ही वे कक्षा में प्रवेश करते थे। कहानियों को वे इतने रोचक ढंग से सुनाते थे कि ऐसा लगता था कि सत्र कभी खत्म ही न हो। अनेकों कहानियां सुनाया करते थे सर। कहानी के अंत में इससे मिली शिक्षा के बारे में पूछा करते थे कक्षा में। 'उपाय-चतुष्टय' का काफी प्रयोग करते थे जिसे हम साम दाम दंड भेद के नाम से जानते हैं। कक्षा में साम दाम और भेद का कुछ विद्यार्थी पर तनिक भी असर नहीं होता था। फिर अंतिम में ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करते थे गिरि सर जिसे वे प्रसाद कहते थे। प्रसाद मिलने पर कई विद्यार्थी के खुशी के आंसू टपकने लगते, कई विद्यार्थी तो अपना मित्र धर्म निभाते हुए टीचर से कहकर अपने मित्र को भी अपने साथ प्रसाद का आनंद दिलाते थे।

"अंग्रेजी में सही लिखा है कि नहीं देखकर बताओ" कहकर गिरि सर ने विद्यार्थी जीवन के यादों के भंवर से निकालकर मुझे आवेदन पत्र थमा दिया।

"हां, सब सही लिखा हुआ है" कहकर मैं आवेदन पत्र को हिंदी में पढ़कर सुनाने लगा।

"सर, आप अचानक स्कूल क्यों छोड़कर चले गए थे?" कुछ जवाब न पाकर मैं समझ गया कि जिस सर को मैं जानता था वे अब स्कूल वाले सर नहीं रहे। क्या वजह हो सकती है?



श्री अमर आनन्द मिंज
कनिष्ठ अनुवादक

विद्यार्थी जीवन में सर के अचानक स्कूल छोड़ने के बाद कुछ दिनों तक हम विद्यार्थी उन्हें मिस करते थे। लेकिन उनके स्थान पर किसी नए टीचर के आ जाने से धीरे-धीरे उन्हें भी भुला दिया गया। जैसे पेड़ से पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और नई कोपले निकल आते हैं। उसी तरह शायद वे भी अतीत की घटनाओं को भूलकर आगे बढ़ गए होंगे। यह सोचकर मैं उनको प्रणाम कर जाने लगा। तभी बैंक का एक कार्मिक मुझे बताने लगा कि इन्हें भूलने की बीमारी है। अकेले ही रहते हैं और अतीत का कुछ याद भी नहीं है। इनका बेटा यू.एस. में रहता है। अपनी पत्नी के साथ यू.एस. गए थे फिर वहां मन नहीं लगा तो वापस आ गए। बेटा नहीं आता है इनको देखने, अपनी माँ के देहांत के समय भी नहीं आया था। लेकिन पैसा टाइम पर भेज देता है। बार-बार यू.एस. ले जाने की जिद करता है, घर बेचना चाहता है। लेकिन इनको यहीं रहना है। इनका बेटा घर के दैनिक काम के लिए एक नौकर व नर्स रखता है। नौकर इनके साथ में ही आया है, अभी पान खाने गया होगा। इन्हें किसी से बात करने नहीं देता है। इतने में उनका नौकर वहां आ गया और उन्हें साथ लेकर काउंटर पर चला गया। वो नौकर कम मालिक ज्यादा लग रहा था। और इस तरह सर के साथ इस मुलाकात में यहीं विराम लग गया।

अब आगे की पंक्तियों में ये हो सकता है कि मैं इस संपूर्ण घटना का विश्लेषण कर एक-दो पृष्ठ और लिख दूँ या फिर अंग्रेजी साहित्य के प्रसिद्ध लेखक 'जॉर्ज बर्नाड शॉ' की भांति कहानी यहीं समाप्त कर दूँ इन पंक्तियों के साथ-

"कुछ लोग एक रोज़
जो बिछड़ जाते हैं वो हजारों के
आने से मिलते नहीं
उम्र भर चाहे कोई पुरकारा करे
उनका नाम वो फिर नहीं आते..."

ज़िन्दगी के सफ़र में
गुज़र जाते हैं जो मकाम वो फिर नहीं आते,
वो फिर नहीं आते..."



भारत की सॉफ्ट पावर

भारत अपनी बौद्धिक व सांस्कृतिक ताकत (सॉफ्ट पावर) को तब से दुनिया के सामने पेश करता रहा है, जब राजनीतिक विशेषज्ञों ने इस धारणा का प्रतिपादन भी नहीं किया था। पिछले दशक के दौरान भारत ने कूटनीति के मामले में अपनी सॉफ्ट पावर का ज्यादा व्यवस्थित तरीके से इस्तेमाल किया है। जनसंचार, वैश्विक व्यापार और पर्यटन के मौजूदा दौर में 'साफ्ट पावर' की अवधारणा ने विश्व के विभिन्न देशों की विदेशी नीति में विशिष्ट स्थान हासिल कर लिया है। अधिक-से-अधिक 'पावर' की तलाश में प्राचीन काल से ही युद्ध लड़े जा रहे हैं, किन्तु समय के साथ 'पावर' के स्वरूप और मायने में परिवर्तन आया है। अब 'हार्ड पावर' के स्थान पर 'सॉफ्ट पावर' के प्रयोग को अधिक सहूलियत भरा माना जाता है।

वर्ष 2014 में सत्ता में आए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भारत की साफ्ट पावर का इस्तेमाल पूरी शिद्दत से करने के लिए जाने जा रहे हैं। 'सॉफ्ट पावर' शब्द का प्रयोग अंतरराष्ट्रीय संबंधों में किया जाता है जिसके तहत कोई राज्य परोक्ष रूप में सांस्कृतिक अथवा वैचारिक साधनों के माध्यम से किसी अन्य देश के व्यवहार अथवा हितों को प्रभावित करता है। सॉफ्ट पावर शब्द का उपयोग उस क्षमता के लिए किया जाता है जिससे दूसरों के साथ बिना ताकत या धमकी का इस्तेमाल किए ही कुछ करने के लिए तैयार किया जा सके।

पारंपरिक रूप से 'हार्ड पावर' जहाँ राज्य के सैन्य और आर्थिक संसाधनों पर निर्भर करती है वहीं सॉफ्ट पावर किसी देश के सामने अपने आकर्षण को पेश कर उसको

खुद से सहमत करने की कोशिश करता है। यह किसी भी देश के तीन प्रमुख संसाधनों पर निर्भर करता है - संस्कृति, राजनीतिक मूल्य और विदेश नीति। सॉफ्ट पावर मूल रूप से ऐसी चीजों पर निर्भर करता है जिसको मापा नहीं जा सकता। यानि यह दूसरे देश को अपनी अच्छी छवि पेश कर अपने बारे में उसकी सोच को बदलने से जुड़ा है। आज ज्यादातर देश सॉफ्ट पावर और हार्ड पावर को एक साथ

मिला कर इस्तेमाल करते हैं जिसे 'स्मार्ट पावर' भी कहते हैं। हाल के कुछ वर्षों में भारत ने भी 'स्मार्ट पावर' के प्रयोग पर बल दिया है, परंतु इसमें 'सॉफ्ट पावर' पर विशेष ध्यान दिया गया है। चीन का 'बेल्ट एंड रोड' पहल 'सॉफ्ट पावर' के प्रयोग का सबसे अच्छा उदाहरण है, जिसका उद्देश्य विकास के नाम पर छोटे देशों को चीन पर निर्भर बनाना है ताकि वे चीन की नीतियों का समर्थन करें। सॉफ्ट पावर की नीतियों के अंतर्गत विभिन्न देशों के मध्य सहयोग को बढ़ावा दिया जाता है, जिससे यह संबंधों को मजबूत कर विकास में योगदान करती है। प्राचीन काल में भी कौटिल्य और कामंदक जैसे विद्वानों ने राज्य के मामलों में सफलता हासिल करने के लिए 'सॉफ्ट पावर' के प्रयोग की वकालत की थी। 'हार्ड पावर' की अपेक्षा 'सॉफ्ट पावर' नीति में संसाधनों का प्रयोग प्रभावी



सुश्री नेहा कुमारी
पुत्री- श्री बीरेन्द्र यादव
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

तरीके से हो सकता है। डिजिटल क्रांति के वर्तमान युग में राज्यों के बीच संपर्क एवं सद्भाव का महत्व बढ़ता जा रहा है, इस परिपेक्ष में 'सॉफ्ट पॉवर' रणनीतियाँ ही उचित मानी जा रही हैं। 'हार्ड पॉवर' मुख्यतः हथियारों और प्रतिबंध पर निर्भर करता है, जबकि 'सॉफ्ट पॉवर' सांस्कृतिक गतिविधियों, अध्यात्म तथा योग जैसी अमूर्त चीजों पर निर्भर करती है।



भारत में 'साफ्ट पॉवर' प्राचीन काल से ही कूटनीति का एक प्रमुख उपकरण रहा है और इतिहास से हमें इसके प्रयोग के कई उदाहरण देखने को मिले हैं। भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू का विश्वास था कि भारत वैश्विक मामलों के लिए बाध्य है। मौजूदा समय में भारत विदेशों में अपनी छवि को बढ़ाने के लिए अपने 'साफ्ट पॉवर' संसाधनों का उपयोग करने की दिशा में एक रणनीतिक दृष्टिकोण लेता दिख रहा है। आज बॉलीवुड, सूफी संगीत और योग जैसी तमाम चीजें जो भारतीय संस्कृति का हिस्सा हैं, विश्व के विभिन्न देशों तक पहुँच गई हैं। भारत की अध्यात्मिकता योग दर्शन, धर्म आदि के साथ-साथ अहिंसा, लोकतांत्रिक विचारों आदि ने भी वैश्विक समुदाय को आकर्षित किया है। भारत की 'साफ्ट पॉवर' कूटनीति में शामिल

हैं, आर्युवेद, बौद्ध धर्म, क्रिकेट, भारतीय प्रवासी, बॉलीवुड, भारतीय भोजन, गाँधीवादी आदर्श और योग आदि।

बीते कुछ समय में विभिन्न देशों में मौजूद भारतीय प्रवासियों से जुड़ने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। यह भारत के लिए गर्व की बात है कि दुनिया की शीर्ष तीन सबसे बड़ी कंपनियों के CEO भारतीय मूल के हैं। भारत सरकार के आग्रह पर 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में UN ने मान्यता दी है। यह सब साफ्ट पॉवर नीतियों के कारण ही आगे बढ़ी हैं। देश में बौद्ध धर्म से संबंधित पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने वर्ष 2014 में बौद्ध सर्किट के विकास की भी घोषणा की थी। बढ़ती बहुधुवीय विश्व व्यवस्था में भारत को खुद को स्थापित करने की आवश्यकता है। अतः आवश्यक है कि भारत अपनी विदेश नीति में 'साफ्ट पॉवर' को उचित स्थान दे और 'साफ्ट पॉवर' का प्रयोग करते हुए वैश्विक जगत में अपनी एक नई पहचान स्थापित करें।



भारत में लैंगिक असमानता

भारतीय महिलाओं को पिछले कई शताब्दियों से परिवार, समाज, सरकार एवं कार्यक्षेत्र पर असमानता एवं भेद-भाव का सामना करना पड़ रहा है। लैंगिक असमानता की कुरीति की वजह से वे ठीक से फल-फूल नहीं पा रहे हैं। भारत में लड़कियों और लड़कों के बीच न केवल उनके घरों और समुदायों में बल्कि हर जगह लैंगिक असमानता दिखाई देती है। पाठ्यपुस्तक, फिल्म, मीडिया आदि सभी जगह उनके साथ लिंग के आधार पर भेदभाव किया जाता है। विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति के बावजूद, कई महिलाओं को लिंग के आधार पर भेदभाव और असमान व्यवहार का सामना करना पड़ता है। लैंगिक असमानता में योगदान देने वाले प्रमुख कारकों में से एक पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण और मानदंडों का कायम रहना है जो महिलाओं की भूमिकाओं और अवसरों को सीमित करते हैं। लैंगिक असमानता को दूर करने में शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है। यद्यपि शहरी क्षेत्रों में लड़कियों की शिक्षा तक पहुँच में सुधार हुआ है तथापि असमानताएँ अभी भी मौजूद हैं। लिंग आधारित हिंसा एक गंभीर मुद्दा है, जो महिलाओं और लड़कियों के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। घरेलू हिंसा, बाल-विवाह और दहेज संबंधी दुर्व्यवहार आम बात हैं। कानूनी सुरक्षा को मजबूत करना, महिलाओं के अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाना और सहायता सेवाएँ प्रदान करना लिंग आधारित हिंसा से निपटने और महिलाओं के लिए सुरक्षित समुदाय बनाने में मदद करता है। यद्यपि महिलाओं के विरुद्ध सभी प्रकार के भेद-भाव को समाप्त करने के लिए आवश्यक

करता है। इसके अलावा, राज्य के नीति निर्देशक तत्व में भी ऐसे बहुत से प्रावधान हैं जो महिलाओं की सुरक्षा और भेदभाव से रक्षा करने में मदद करता है। लैंगिक समानता के उद्देश्य को हासिल करना जागरूकता कार्यक्रमों के आयोजन और कार्यालयों में कुछ पोस्टर चिपकाने तक ही सीमित नहीं है। यह मूल रूप से किसी भी समाज के दो सबसे मजबूत संस्थानों - परिवार और धर्म की मान्यताओं को बदलने से संबंधित है।



श्री सुबोध कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

भारतीय समाज की यह वास्तविकता आर्थिक विकास मंच एवं यू.एन.डी.पी. (मानव विकास रिपोर्ट) के रिपोर्ट में प्रत्येक वर्ष दिखायी जाती है। भारत में जेंडर गैप में गिरावट चिंता का विषय है।

ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट में मुख्यतः चार पैरामीटर होते हैं:-

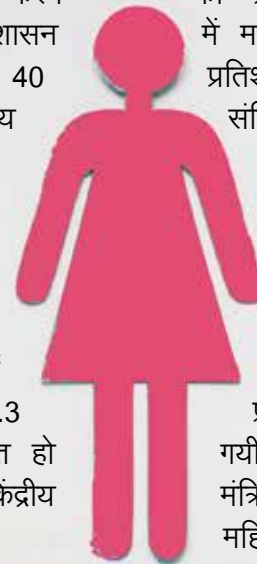
1. आर्थिक सहभागिता व अवसर
2. शिक्षा
3. स्वास्थ्य
4. राजनीतिक सशक्तिकरण

भारतीय महिलाएं महिला आरक्षण अधिनियम, 2023, संविधान का 106वां संशोधन के माध्यम में बराबरी का उम्मीद रख सकती हैं क्योंकि इसके तहत महिलाओं को संसद में एक-तिहाई सीटें आरक्षित करने का प्रावधान है। भारत में पंचायती राज शासन में महिलाओं की राजनैतिक भागीदारी 40 प्रतिशत है, जिसका मुख्य श्रेय संविधान के 7 3 वें

व 74वें संशोधन को जाता है। हालिया रिपोर्ट में यह पाया गया है कि 17वीं लोकसभा की तुलना में 18वीं लोकसभा में महिलाओं का प्रतिनिधित्व 14.3 प्रतिशत से घटकर 13.6 प्रतिशत हो गयी है। 18वीं लोकसभा में केंद्रीय मंत्रिपरिषद में महिलाओं की



पहल एवं उनकी स्थिति को सुधारने के लिए संवैधानिक गारंटी भी दी गयी है। फिर भी वे पुरुषों की तुलना में पीछे ही हैं। संविधान का अनुच्छेद 15 लिंग, धर्म, जाति और जन्म स्थान पर अलग होने के आधार पर किये जाने वाले सभी भेदभावों को निषेध करता है। अनुच्छेद 15(3) किसी भी राज्य को बच्चों और महिलाओं के लिये विशेष प्रावधान बनाने के लिये अधिकृत





सहभागिता सिर्फ 8.33 प्रतिशत रह गयी है, जो कि शीर्ष शक्ति सोपान में निर्णय करने के अधिकार में निम्न प्रतिभागिता को दर्शाता है। यह एक व्यंग्य का विषय है कि 18वीं लोकसभा और चार राज्यों का विधानसभा चुनाव नारी शक्ति वंदन अधिनियम 2023 के लागू होने के बाद हुआ फिर भी बहुत सारी पार्टियों ने महिला उम्मीदवारों को तवज्जों नहीं दिया। कहा जाता है कि भारत में एक पुरुष 100 कमाता है तो महिला सिर्फ 40 रु. कमाती है। इस आर्थिक असमानता को दूर करना बहुत आवश्यक हो गया है। हालांकि, केन्द्र व राज्य सरकार के कार्यालयों में महिला कर्मियों को भी उतना ही मानदेय दिया जाता है जितना कि पुरुष कर्मियों को दिया जाता है।



प्रयास-

‘बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ’, ‘वन स्टॉप सेंटर योजना’, ‘महिला हेल्पलाइन योजना’ और ‘महिला शक्ति केंद्र’ जैसी योजनाओं के



माध्यम से महिला सशक्तीकरण का प्रयास किया जा रहा है। इन योजनाओं के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप लिंगानुपात और लड़कियों के शैक्षिक नामांकन में प्रगति देखी जा रही है। लैंगिक असमानता को दूर करने के लिये कानूनी प्रावधानों के अलावा किसी देश के बजट में महिला सशक्तीकरण तथा शिशु कल्याण के लिये किये जाने वाले धन आवंटन के उल्लेख को जेंडर

बजटिंग कहा जाता है। दरअसल जेंडर बजटिंग शब्द विगत दो-तीन दशकों में वैश्विक पटल पर उभरा है। इसके जरिये सरकारी योजनाओं का लाभ महिलाओं तक पहुँचाया जा रहा है।

लैंगिक असमानता और महिला सशक्तीकरण का भावी एजेंडा:-

1. महिलाओं को वित्तीय संसाधनों से जोड़ना ताकि वे अपनी आधारभूत जरूरतों को पूरा कर सकें और खुद के व्यवसाय को शुरू कर सकें।
2. कार्यस्थलों पर महिलाओं के लिए पारदर्शिता रखनी चाहिए ताकि सभी को समान सुविधाएं एवं समान वेतन दिया जाना चाहिए।
3. महिलाओं को उनके सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए हरसंभव प्रयास करना चाहिए।
4. लोकतंत्र के चार प्रमुख स्तंभों यथा- व्यवस्थापिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका एवं मीडिया में महिलाओं की सहभागिता होनी चाहिए।
5. महिलाओं को शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ावा देने के लिए विशेष कमिटी बनाई जानी चाहिए जो उनके शैक्षिक उपलब्धि को सुनिश्चित कर सके।

लैंगिक समानता का सूत्र श्रम सुधारों और सामाजिक सुरक्षा कानूनों से भी जुड़ा है, फिर चाहे कामकाजी महिलाओं के लिये समान वेतन सुनिश्चित करना हो या सुरक्षित नौकरी की गारंटी देना हो। मातृत्व अवकाश के जो कानून सरकारी क्षेत्र में लागू हैं, उन्हें निजी और असंगठित क्षेत्र में भी सख्ती से लागू करना होगा।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में महिलाओं के विकास के लिए उन्हें ऐसी शिक्षा की व्यवस्था दी जानी चाहिए जो जॉब/नौकरी देने की क्षमता रखता हो, ताकि वे खुद को एवं अपने परिवार को उपयुक्त पोषण दिला सकें। बालिकाओं को बाल विवाह से भी बचाना

चाहिए ताकि अस्वस्थ माता व अस्वस्थ बच्चा जैसे दुष्चक्र से बचा जाए।

सबसे महत्वपूर्ण यह है कि प्रत्येक इंसान को समानता का भाव विकसित करना होगा।



सामान्य रूप से चलने वाली चीजें शायद ही कभी चर्चा में आती हैं। जब असामान्यताएं बढ़ती हैं तो जाहिर तौर पर एक प्रतिकार के रूप में किसी न किसी माध्यम से ये बाहर आती हैं और फिर उसपर समाज में नियम कानून बनाए जाते हैं। जैसे एक समय में हुए विभिन्न अत्याचारों की साक्षी एवं भुक्तभोगी महिलाएं धीरे-धीरे अपने खिलाफ हो रहे अत्याचारों को सामने लाने का प्रयास करने लगीं। महिलाओं की इस मुहिम में पुरुषों की भी अहम भूमिका थी। पर्दा प्रथा, सती प्रथा जैसे कुप्रथाओं को भारत में ब्रह्म समाज के संस्थापक राजा राम मोहन राय द्वारा घोर विरोध किया गया जिसका परिणाम यह हुआ कि दिसंबर 1829 में इस पर रोक लगा दी गई। समाज का एक बड़ा हिस्सा बदलाव न होने तक इन कुप्रथाओं की आग में अपनी जान गंवा देते थे। इसपर तरह-तरह की कविताएं, कहानियां एवं रोचक चलचित्र का भी प्रवाह चलने लगता है, मतलब समाज के सभी सक्षम वर्ग इसपर अपनी प्रतिक्रिया अपने तरीके से देकर समाज को संवेदनशील बनाते रहते हैं।

परिणामस्वरूप समाज परिवर्तित होता है। नियम कानून बनते हैं और फिर शोषित वर्ग का संरक्षण आरंभ होता है। इसके आगे की कहानी फिर बड़ी रोचक हो जाती है जो यह बताती है कि शक्ति आने के बाद मनुष्य को अपना संयम खो देने की संभावना रहती है। संयम भी एक शक्ति ही है। अर्थात् एक शक्ति आ जाने पर दूसरी शक्ति को खो देने की संभावना बनी रहती है। “पावर करप्ट्स” जैसा कुछ मामला हो जाता है। चाहे कोई भी ज्यादातर मामलों में यह हो ही जाता है।

निकट भूत में महिलाओं के हक में कई ऐसे कानून बनाए गए जो सामान्य रूप में बिल्कुल एकतरफा प्रतीत होते हैं। अर्थात् महिलाओं को अधिकार मिला है, और जैसा कि मैंने ऊपर कहा “पावर करप्ट्स”, मतलब उस अधिकार के आ जाने पर कहीं न कहीं उसके दुरुपयोग के मामले धीरे धीरे समाज को, फिर न्याय व्यवस्था को साफ नजर आने लगती है।

भारतीय कानून जो महिलाओं के खिलाफ हिंसा की घटनाओं को रोकने में मदद करते हैं :-

- दहेज निषेध अधिनियम, 1961
- महिलाओं का अश्लील प्रतिनिधित्व (निषेध) अधिनियम, 1986
- घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम, 2005
- कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न अधिनियम, 2013
- आपराधिक कानून (संशोधन) अधिनियम, 2013

आईपीसी की धारा 498-ए के तहत दहेज प्रताड़ना या क्रूरता करने के संबंध में पति या ससुरालवालों के खिलाफ पीड़ित महिला मामला दर्ज करा सकती है। यह एक गैर जमानती अपराध है, जिसमें तीन साल की सजा का प्रावधान है।

विगत कुछ वर्षों में ऐसी कई खबरें देखी गई हैं कि कानून के इस प्रवधान का गलत उपयोग समाज में किया जा रहा है एवं निर्दोष लोगों को गलत तरीके से फंसाया जा रहा है जिससे उनकी हंसती-खेलती जिंदगी बर्बाद हो रही है। माननीय अदालत ने तो यह भी कहा है कि महिलाएं परिवारवालों से मामूली विवाद पर आवेश में आकर ऐसे मामले दाखिल कर रही हैं।

एक खबर के अनुसार धनबाद की रहने वाली एक महिला ने एक प्राथमिकी दर्ज कराई थी।

धनबाद की रहने वाली एक महिला ने अपने ससुरालवालों के साथ ननद और उसके पति के खिलाफ प्रताड़ना का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई थी।

इस पर निचली अदालत ने संज्ञान लिया था। इसके खिलाफ पुरुष और महिला दोनों ने हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी। सुनवाई के दौरान अदालत को बताया कि उनके खिलाफ लगाए गए आरोप सही नहीं हैं,

क्योंकि कथित घटना के दिन वे ट्रेन से सफर कर रहे थे। उनकी ओर से इस तरह के मामले में सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का हवाला दिया गया है।

वैवाहिक विवादों में बढ़ोतरी हुई है।- हाईकोर्ट।

इसमें कहा गया है कि घरेलू हिंसा में दूर के रिश्तेदारों को आरोपित नहीं बनाया जा सकता है। इस पर



श्री शैलेंद्र कुमार
हिंदी अधिकारी



अदालत ने कहा कि पति द्वारा क्रूरता को दंडित करने के उद्देश्य से आईपीसी की धारा में 498-ए को शामिल किया गया था। हालांकि हाल के दिनों में वैवाहिक विवादों में बढ़ोतरी हुई है। ऐसा प्रतीत होता है कि कई मामलों में धारा 498-ए का दुरुपयोग किया जा रहा है।

सर्वोच्च न्यायालय ने अपने एक हालिया निर्णय में IPC की धारा 498A के बढ़ते दुरुपयोग को रेखांकित करते हुए कहा कि इससे विवाह संबंधों में संघर्ष बढ़ रहा है। सामान्य रूप में देखें तो यह एक बिगड़ते समाज की ओर इशारा करता है। जो पूरे समाज के लिए तथा अगली पीढ़ी के लिए घातक है। जब समाज की एक इकाई अपने आप को एक सूत्र में बांध कर नहीं रख पा रही है तो इसका खामियाजा तो कहीं न कहीं भुगतना ही पड़ेगा। यह कहा जा कर रुकेगा। क्या इसका कोई सैचुरेशन प्वाइंट है? सैचुरेशन प्वाइंट आने तक ये पुरानी सामाजिक व्यवस्था किस प्रकार का विकृत आकार ले चुकी होगी?

धारा 498A का उद्देश्य राज्य द्वारा त्वरित हस्तक्षेप के माध्यम से एक महिला पर उसके पति एवं ससुराल वालों द्वारा की गई क्रूरता को रोकना है।

न्यायालय ने माना कि IPC की धारा 498A जैसे प्रावधानों को पति और उसके रिश्तेदारों के खिलाफ व्यक्तिगत दुश्मनी से निपटने के लिए एक उपकरण के रूप में प्रयोग करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। इन दिनों कई मामलों में धारा 498ए को तनावपूर्ण वैवाहिक स्थिति से परेशान होने पर पत्नी (या उसके करीबी

रिश्तेदारों) द्वारा ब्लैकमेल करने का साधन बना लिया जाता है। इसके कारण ज्यादातर मामलों में धारा 498ए के तहत शिकायत के बाद आमतौर पर अदालत के बाहर मामले को निपटाने के लिये बड़ी राशि की मांग तक की जाने लगी है।

इन्हीं सब मामलों को देखते हुए, आज के अपराध जगत में आप देखेंगे कि महिलाओं की भागीदारी काफी बढ़ती जा रही है और इसी के मद्देनजर एक पुरुष आयोग की आवश्यकता पुरुष समाज को महसूस होने लगी। जिसके फलस्वरूप आप देखेंगे कि एक एनजीओ सामने आया है जिसका नाम है 'सहोदर' जिसका पंच लाइन है 'इक्वालिटी फॉर मेन'। इस एनजीओ की वेबसाइट तो यह तक कहती है कि स्त्रियों के लिए हजारों की संख्या में एनजीओ खुले हुए हैं जो केवल पैसे की उगाही कर रहे हैं। स्त्रियों के लिए अलग से मंत्रालय है, सरकारी नीतियां हैं एवं प्रत्येक प्रांत में अलग से केंद्रीय कमीशन भी है। हैरानी की बात तो यह है कि यह भेद भाव केवल कानूनी स्तर पर नहीं है बल्कि शिक्षा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी है। उन्होंने अपनी वेबसाइट पर यह भी लिखा है कि प्रोस्टेट कैंसर उतना ही खतरनाक है जितना स्तन कैंसर परंतु स्तन कैंसर के रिसर्च पर 25 गुणा अधिक खर्च किया जाता है। साथ ही महिलाओं की सुरक्षा के लिए हजारों की संख्या में वेलफेयर होम है परंतु पुरुषों के लिए यह सुविधा उपलब्ध नहीं है। महिलाओं की तुलना में तीन गुणा पुरुष घर विहिन हैं।



धारा 498 ए

संगत का असर

बात उन दिनों की है जब मोबाइल और इंटरनेट का इतना विकास नहीं हुआ था, परीक्षा का रिजल्ट हो या कोई सनसनीखेज खबर न्यूज से पहले लोगो द्वारा पता चलता था। एक छोटे से गाँव रामपुर में रहने वाला लड़का जो पढ़ने में हमेशा फर्स्ट रैंक लाता था..पढ़ना उसकी पसंद कम, पिता जी का खौफ ज्यादा था..खैर पढ़ने में अच्छा था तो घर परिवार में सबका प्यारा था और जब से मैट्रिक में टॉप किया था तो किसी भी परिवार के बच्चे को कैसे पढ़ाना है, या कौन सा विषय लेना है इस जानकारी को लेने के लिए लोग उसके घर ही आते थे। वैसे तो इसका नाम अरुण था लेकिन लोग इसे प्यार से छोटू कहते थे। छोटू वैसे देखने में सीधा, सरल और सांवले रंग का लड़का था और क्योंकि पढ़ने में अच्छा था तो बहुत ही कम समय में अपने गांव में सबका लाडला हो गया था। मगर इतने लाड़ और सम्मान होने के बाद भी पिता जी का गुस्सा और अनुशासन उसके लिए कम नहीं था। वो हर छोटी बात पर उसे डांटते थे बल्की अपनी छड़ी उठा लेते थे..इसलिये वह छोटे से ही अंतरमुखी हो गया था। वह अपने मन की बात घर के लोगों से छिपाने लगा।

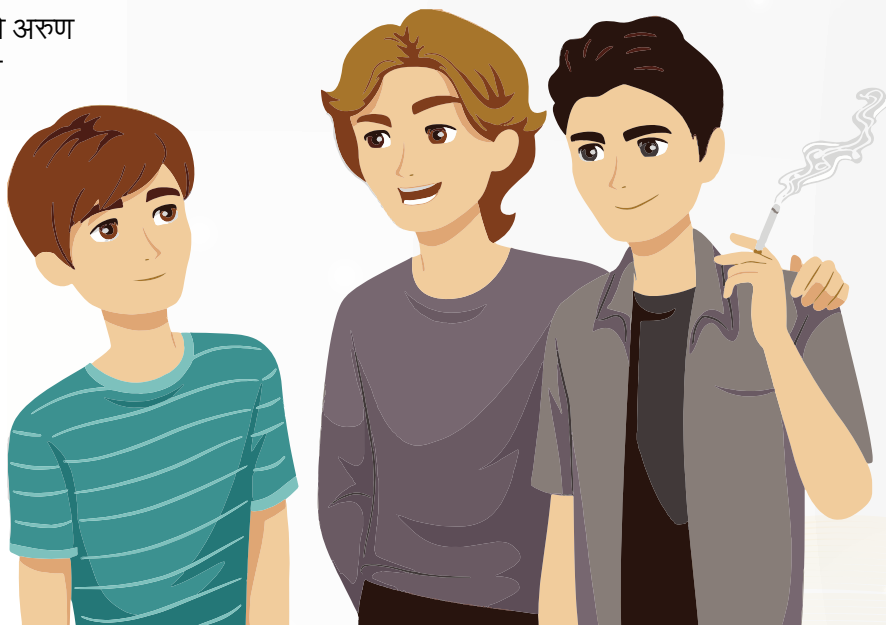
आज भी अगर घर में कोई बुद्धिमान बालक होता है तो उसे डॉ या इंजीनियर बनाना ही घर वालो की पहली चॉइस होती है। खास कर मिडिल सर्विस क्लास लोगो को जरूर ही, तो अरुण के घर वालो ने भी खास कर पिता जी का भी यही सपना बन गया की अपने बेटे को इंजीनियर बनाऊंगा फिर इसी बीच अरुण के मामा जी, जो कि रेलवे में एक अच्छे पद पर काम करते थे उसके घर आये और बताया की हाल में बनारस यूनिवर्सिटी में इंटरमीडिएट के फॉर्म आए है उसे भर दो। फिर क्या, अरुण को लगा यही एक मौका है, एक तो शहर में पढ़ने जाने का मौका मिलेगा और पिता जी से भी दूर रहूँगा, फिर क्या अरुण ने दो महीने दिन-रात एक कर दिए और एग्जाम की तैयारी करने लगा बहुत जल्दी ही एग्जाम का दिन नज़दीक आ गया और अरुण पूरे मन से एग्जाम देने गया। कहते हैं न की "मेहनत का फल मीठा होता है" होना क्या था अरुण की मेहनत रंग

लायी और टॉप थ्री बच्चो में उसका सेलेक्शन हो गया। इस बार भी वह अपने गांव का एकलौता था जो गांव से शहर इंटरमीडिएट की पढ़ाई करने जा रहा था..

कहते हैं न कामयाबी और प्रशंसा को अगर संभाला न जाये तो सर चढ़ जाती है। वही अरुण के साथ हुआ उसके पिता ने उसका एडमिशन बनारस यूनिवर्सिटी में करा दिया और रहने के लिए हॉस्टल में एक कमरा भी अलॉट करा दिया गया, फिर क्या? अरुण को ये आज़ादी बहुत पसंद आ रही थी, चुकि अरुण अभी-अभी छोटे गांव से आया था और अपने सख्त पिता से दूर अकेले रहने आया था तो उसकी दोस्ती कुछ गलत



श्री विकास तिवारी
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक, लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
लखनऊ, शाखा रांची



लोगो से हो गयी और अरुण अपना उद्देश्य जो की पढ़ाई था भूल कर दोस्तों के साथ घूमने लगा। शहर की हवा उसे लग गयी। अरुण एक छोटे घर से आया था तो उसके पास बहुत पैसे नहीं होते थे और जो पैसे पिता जी देते थे उसका हिसाब भी देना पड़ता था इसलिए दोस्तों के साथ मस्ती करने के लिए वो झूठ बोल कर घर वालों से पैसा लेने लगा। यहाँ तक की वह अपने ट्यूशन फीस से जुआ जैसे बुरी आदतों में फँस गया। होना क्या था, इन सब की वजह से उसका पढ़ाई में मन नहीं लगता वो दिन भर यही सोचता कि कैसे क्या करूँ की मेरे पास भी बहुत सारे पैसे आ जाए। धीरे-धीरे उसके फाइनल ईयर के एग्जाम भी नज़दीक आ गए और वही हुआ जिसका डर था। वो जो मैट्रिक में 80% नंबर लाया था वो इंटरमीडिएट में फेल होते- होते बचा और उसे मात्र 33.8% ही नंबर आये। इधर पिता जी इस बात से अनजान थे और बेटे के रिजल्ट को लेकर वो भीतर से बहुत उत्साहित थे। मगर जैसे ही रिजल्ट आया, पिता जी का गुस्सा सातवे आसमान पर था। अरुण को इस बात का अंदाज़ा लग गया था कि उसे उसके पिता जी के गुस्से से कोई नहीं बचा सकता। इसलिए वह डर के घर से भाग गया और चलती हुई ट्रेन पर चढ़ गया। उस दिन वह बहुत रोया, बहुत पछताया, मन ही मन अपने आप को कोसने लगा की क्यूँ उसने अपनी ज़िन्दगी बर्बाद कर ली और मन ही मन ठाना की अब आज से वह अपनी सारी बुरी लत छोड़ देगा। मगर अब तो वो घर से भाग आया था और वापस घर जा के पिता जी को क्या बोलेंगा। घर में वापस जाने पर उसे बहुत मार, डांट पड़ेगी। ये सोचते-सोचते कब दिल्ली आ गया उसे पता ही नहीं चला। घर से निकले पूरा एक दिन हो चुका था। अब उसे भूख भी लग रही थी। मगर उसके पास एक पैसा नहीं था कि वो कुछ खा सके। वह दिल्ली स्टेशन में पूरा दिन भटकता रहा मगर उसे कुछ समझ नहीं आया कि वह क्या करे? फिर वह एक होटल में गया। वहाँ उसने बहुत धीमे से कहा "भैया कोई काम हो तो बता दो, बदले में मुझे कुछ खाने को दे देना।" और अरुण को बहुत तकलीफ हो रही थी कि उसे अपनी गलत हरकतों की वजह से आज ये दिन देखने को मिल रहा है। इधर उसके घर में भी सब बहुत परेशान थे कि मात्र 17 साल का लड़का कहाँ गया होगा। पिता जी ने उसके गुमसुदगी की कम्प्लेन पुलिस स्टेशन में भी दी और रोज स्टेशन जाकर सिर्फ एक बात पूछते कि सर मेरे अरुण की कोई खबर मिली और रोज निराश मन से वापस आ जाते। खुद में दुखी हो कर कहते कि आज अगर मैं अपने बेटे के लिए इतना सख्त न होता तो आज मुझे अपने बेटे से दूर नहीं रहना पड़ता ...। अरुण को इधर होटल में साफ - सफाई का काम मिल गया। रोज सुबह उठ कर होटल में साफ सफाई और लोगों को खाना देना और बर्तन साफ करना था। रोज वह सोचता और अपने आप से सवाल करता कि क्यों मैंने

अपनी अच्छी ज़िन्दगी को बर्बाद कर दिया। ऐसे ही चल रहा था कि अचानक वहाँ एक आदमी आया जो शायद उसके गांव का था। वह बहुत देर से उसे घूर रहा था। जब अरुण उसके पास आर्डर लेने गया तो उस आदमी ने उससे पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है और कहाँ के हो? ये सुनते ही अरुण रोने लगा और उसने बताया कि मैं रामपुर का रहने वाला हूँ। मेरे पिता का नाम चम्पक लाल है। मैं डर से घर छोड़ कर भाग के आ गया। अब मेरे पास वापस जाने के लिए पैसे नहीं हैं। उस आदमी ने उसे बोला अरे तू तो मेरे गांव के पास वाले गांव का है। तुम्हारा नाम मैंने पेपर में पढ़ा था। अच्छा बेटा तू मत परेशान हो मैं तुम्हें तुम्हारे घर लेकर जाऊंगा...। ये सुनते ही अरुण की खुशी का ठिकाना नहीं रहा और वह उनके साथ अपने घर को आया। जैसे ही उसने अपने पिता जी को देखा वो उस आदमी के पीछे छिप गया जो उसे दिल्ली से लेकर आया था। ये देख उसके पिता जी उसके पास गए और बोले बेटा अपने पिता को छोड़ के कहा गए थे। आ जा तेरी माँ तुम्हारा इंतज़ार कर रही है... अब मैं तुम्हें कभी नहीं मरुंगा... ये सुनकर अरुण जोर से रोने लगा और अपने पिता के पैरों पर गिर के माफ़ी मांगी और स्वीकार किया की मुझसे बहुत बड़ी गलती हो गयी थी। मैंने गलत संगत में आकर अपना भविष्य खराब कर लिया। अब मैं आगे से कभी ऐसा कुछ नहीं करूँगा। मैं आपको वचन देता हूँ ये सुनकर पिता ने भी अरुण को गले से लगा लिया। बोले अभी कुछ नहीं बिगड़ा है बेटा तुम फिर से मेहनत कर के सब सही कर लोगे मुझे तुम पर पूरा भरोसा है।



जिओ और जीने दो

तिलकार गाँव में मोती नाम का एक कुत्ता रहता था। रास्ते में उसने एक साथ खेल रहे कुत्ते-बिल्लियों के झुंड को देखा और सभी को अपने साथ खेलने के लिए बुलाया। मोती ने खुशी से उनके साथ खेला और उनके खुशियों में शामिल हुआ। वह अपने दोस्तों के साथ इस चिन्ता में परेशान था कि और दिन तो हमारे पेट भर जाते हैं लेकिन होली के दिन हमारा क्या होगा। वक्त बितता गया, कुछ समयांतराल होली का महापर्व भी आ गया। उस दिन जब सभी लोग खुशी से होली का उत्सव मना रहे थे तब भूखा मोती खाने की तलाश में इधर-उधर भटक रहा था। जब उसे कहीं भी खाना नहीं मिला तो वो सोचने लगा, काश - 'मैं भी इंसान होता तो बहुत मस्ती करता....लेकिन यह क्या ? होली का मतलब यह नहीं है कि नशे में धुत होकर कुआं, नाली, नदी में गिर जायें। यह बहुत ही बुरी और शर्म की बात है। इससे व्यक्ति का नियंत्रण कम हो जाता है, जिससे दुर्घटनाओं की संभावना बढ़ जाती है और दूसरों के साथ गलत व्यवहार भी हो सकती है। होली का त्योहार खुशी और रंगों का होता है, इसे संयम और जिम्मेदारी के साथ मनाया जाना चाहिए ताकि सभी लोग सुरक्षित और खुश रहें न कि लोग नशे में धूत होकर अपने संस्कार एवं परम्परा को ही भूल जायें।

मोती भोजन की तलाश में थक कर एक पेड़ के नीचे जाकर बैठ जाता है। पेड़ के पीछे से रानी बिल्ली ने पूछा - "अरे ! मोती भैया होली के दिन तुम्हें कुछ खाने को मिला।" मोती ने कहा - "नहीं बहना, सुबह से खाना ढूँढ- ढूँढ कर थक गया हूँ ।

मगर खाना का एक दाने का भी दर्शन नहीं हुआ है।" तभी मंजू बकरी बोली - मोती "भैया ये इंसान एक दम से बुद्धू है। हमारे बारे में कुछ नहीं सोचता।" तभी पेड़ के पीछे एक लड़का (सोनु) दोनों की बातें बहुत ध्यान पूर्वक सुन रहा था। फिर मोती, रानी और मंजू से कहता है कि आखिर हम सभी इन इंसानों के भरोसे ज़िन्दा है। सोनु बीच में टोकता है और बोलता है "तुम लोगों ने भी सुबह से कुछ नहीं खाया।" मोती, मंजू और रानी आश्चर्य से देखते हैं तभी मोती सोनु से बोलता है - "अगर तुम हम सबको को कुछ खाना खिला दो तो बड़ी तुम्हारी बहुत मेहरबानी होगी।" इतना सुनकर सोनु वहां से चल पड़ता है। तभी रानी बिल्ली बोल उठती है कि इंसान ही हमारे लिए अन्नदाता है। मोती और मंजू इस बात को सुनकर स्वीकार करते हुए सिर हिलाते हैं। तत्पश्चात मोती बोला - "मैंने एक साधु चिरकुट बाबा को प्रवचन देते हुए सुना था जिनके शरीर पर नौ मन की गुदरी लदी थी और ललाट तो इस प्रकार चमक रहे थे कि मानो सम्पूर्ण विश्व के ज्ञान का भंडार उनके पास ही है।" चिरकुट बाबा के प्रवचन को सुनने से भी ज्यादा एक नज़र उनके दर्शनालाभी के लिए लाखों की भीड़ जमा हुई थी। चिरकुट बाबा का प्रवचन इस प्रकार था - "मनुष्यों को जीवन बोध में जीना सीखना चाहिए विरोध में नहीं, एक सुखमय जीवन के लिए इससे श्रेष्ठ कोई दूसरा उपाय नहीं हो सकता। जीवन अनिश्चित है और जीवन की अनिश्चितता का मतलब यह है कि यहाँ कहीं भी और कभी भी कुछ भी हो सकता है। इस पृथ्वी पर आए प्रत्येक जीव बस कुछ दिनों के मेहमान से ज्यादा कुछ नहीं है इसीलिए जीवन को हंसी में जिओ, हिंसा में नहीं। चार



श्री बिनोद कुमार प्रभात
पर्यवेक्षक



दिन के इस जीवन को प्यार से जिओ, अत्याचार से नहीं। जीवन जरूर आनंद के लिए ही है इसीलिए इसे मजाक बनाकर नहीं मजे से जिओ। इस दुनिया में बाँटकर जीना सीखो, बंटकर नहीं। अगर तुमलोग बंटोगे तो कटोगे। एकता में बल है। जीवन वीणा की तरह है, ढंग से बजाना आ गया तो ज़िंदगी आनंद ही आनंद है।" इस प्रवचन को सुनकर बाबा की खूब जय-जयकार होने लगी और सभी मंत्रमुग्ध हो गये।

इधर सोनू की माँ पार्वती घर में बर्तन धो रही है तभी सोनू घर में दाखिल होता है और अपनी माँ से अपने दोस्तों को खिलाने के लिए कुछ होली का पकवान मांगता है। कुछ समयांतराल माँ रसोई घर से निकाल कर एक पोटली देती है और बोलती है- "बेटा सोनू..... मैंने तुम्हारे और तुम्हारे दोस्तों के लिए भी पकवान रख दिया है.... तुम अपने दोस्तों के साथ मिलकर खा लेना।" सोनू अपनी माँ से पोटली लेकर घर से निकल जाता है और बोलता है कि ठीक है माँ.....तुम मेरी चिंता मत करना, मैं खा लूंगा....। माँ बोली ठीक है बेटा,... अपना ख्याल रखना और जल्दी ही घर लौट आना। सोनू के दिमाग में तो कोई और ही जुनून सवार था। वो चाहता था कि मैं शीघ्र ही भूखे मोती एवं उनके दोस्तों को खाना खिला सकूँ। उधर मोती, मंजू रानी और उनके अन्य मित्र खाने के इंतजार में व्याकुल है तभी मोती की नज़र सोनू के हाथ में लिए हुए पोटली पर पड़ती है यह देख सभी खुशी से नाचने लगते हैं। जैसे ही सोनू उनके पास पहुंचता है दोनों खुशी से सोनू के पैरों चुमने और चाटने लगते हैं। सोनू पोटली खोलकर उन सभी के सामने रख देता है और वहां से जाने लगता है। तभी मोती बोल उठता है- हम सभी ज़िंदगी भर तुम्हारे एहसानमंद रहेंगे। सोनू बोलता है नहीं-नहीं हम सभी एक दूसरे के पूरक हैं। इधर सभी अपने भूख मिटाने में लग जाते हैं। सोनू सभी पालतू जानवरों को खाना खाते देख खुशी से उछलता हुआ वहां से चल देता है। वह मन ही मन सोचता जाता है कि हर इंसान को 'जिओ और जीने दो' के मूल मंत्र पर अमल करना चाहिए। यह एक ऐसा सिद्धांत है जो जीवन में शांति और निजी अस्तित्व को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण संदेश है। मनुष्य को खुद भी शांतिपूर्ण और सुखी जीवन जीना चाहिए और दूसरों



को भी उसी तरह जीने देना चाहिए। यह मानवीय संबंधों और समाज में सहिष्णुता की नींव है। यह केवल अपने जीवन को बेहतर ही नहीं बनाता बल्कि समाज में भी शांति और समृद्धि को बढ़ावा देता है। यह दूसरों की विचारधारा, मान्यताओं और जीवनशैली का सम्मान करने की शिक्षा देता है। यह हमारे व्यक्तिगत जीवन में भी सकारात्मक प्रभाव डालता है। यह हमें ईर्ष्या, नफ़रत और अन्य नकारात्मक भावनाओं से मुक्त करता है और हमें अपनी ऊर्जा को रचनात्मक और सकारात्मक कार्यों में लगाने के लिए प्रेरित करता है। समाज में सांप्रदायिक सद्भावना और एकता की भावना विकसित होती है। जब लोग एक-दूसरे के अधिकारों का सम्मान करते हैं और किसी के जीवन में हस्तक्षेप नहीं करते तो समाज में शांति और सहयोग का वातावरण बनता है। उस दिन से सोनू ने मोती मधु, रानी और अन्य को अपना दोस्त बना लिया और वह प्रत्येक दिन उनके साथ खेलने आता। सोनू को अब एक नया परिवार मिल गया था, जिससे उसकी ज़िन्दगी खुशियों और उत्साह भर गई। दोस्तों इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि सभी पालतू जानवर हमारे मित्र हैं यानि एक दूसरे के पूरक हैं।



युद्ध

'युद्ध' के मैदान में,
सैनिकों का शहीद होना
उनके मौत को रोमांचक
बताता, रेडियो व दूरदर्शन।

बिखरे शव, कुछ अधमरे कुछ अधजले
जल रहे, शहरों के बहुमंजिले
कुछ का निकल रहा है, अर्थी
तो कुछ बन रहे हैं, शरणार्थी

बेचैन प्रियजन, बिल्कुल निःशब्द
चुपचाप बैठकर रोते हुए
अपने-अपने दर्द को दबाये हुए
क्रन्दन के साथ यह कहते हुए
बंद करो नरसंहार,
निरंकुश शासकों से गुजारिश
करते हुए,
कि बंद करो, रासायनिक हथियार

ये कहते हुए
कि विनाश सहवर्ती होता है
व्यक्तिगत नहीं,
मृत्यु रोमांचक होती है

उन संवेदनहीन शासकों के लिए
पूछो उन हताहत पीड़ितों से
कोई शब्द नहीं, कोई धर्म नहीं
कोई कहानी नहीं, कोई कविता नहीं।

चारो ओर स्तब्धता व अंधकार
युद्ध में न जीत होती है, न हार
होता है तो सिर्फ नरसंहार
उजड़ता है, सिर्फ संसारा

बच्चों को क्या पता
क्या होता है, सरहद
वो तो नासमझ,
नहीं जानता बंदूक व बारूद
नहीं समझ पाता है, अंतर
अपने मृत पिता और हत्यारे में।

युद्ध तो है, एक बहाना बस
विश्वशक्तियों का है, यह व्यापार
स्पष्ट है, हम न बुद्ध को मानते
और न ही ईशा को।



श्री शंभू शरण भारती
सेवानिवृत्त वरिष्ठ
लेखापरीक्षा अधिकारी

अनमोल रिश्ते

अपने सौ गमों को परे रख मेरा,
बस वो एक गम मिट जाए ऐसी दुआ करता है।
उसका इश्क़ इस कदर मेरी रूह को छुआ करता है।
कभी ख्वाब में भी देख ले मुझे दूर जाते खुद से,
तो मेरे माथे को आकर चूम लिया करता है,
मैं खुशनसीब हूँ कि वो मुझे खोने से डरता है।

कि शिकायते तो लाखों रहती होगी उसे भी मुझसे,
मगर करें मेरा कोई जिक्र तो तारीफों के पुल बांध दिया करता है।
कमजोर मैं ना पड़ जाऊँ इसलिए वो अक्सर मेरे कंधे पर
अपना हाथ रख लिया करता है।

मेरी हर गलती की माफी है उसके पास,
मगर मुझे कभी गलत करार नहीं करता।

मेरे ऐब मेरी खामियां अपनाने की हिम्मत रखता है और परफेक्ट की बात
जहां आए उसे अक्सर मेरा चेहरा दिखता है।
देखने की तलब जब भी होती है उसे वो बेवक्त मुझे वीडियो कॉल करता है,
मैं खुशनसीब हूँ वो मुझे खोने से डरता है।

कि वो सड़क पर चलते वक़्त मुझे Safe Side पे करता है,
कब तब उसकी पनाह में यूँ रह पाऊँगी,
सोच कर मेरा मन सा भरता है।
कि यूँ इस कदर महफूज रखने के वादे तो उसने मुझसे किए नहीं,
फिर भी निभाए जा रहा है।

कि लड़ाई को वो सिर्फ लड़ाई समझ कर,
मसला सुलझा कर मुझे सीने से लगाता है।
यूँ मुझसे दूर जाने के वो बहाने नहीं करता है,
मैं खुशनसीब हूँ कि वो मुझे खोने से डरता है।
रो दूँ अगर मैं तो वो भी कमजोर पड़ जाता है, आंसुओं की वजह तो पता चले,
जनाब वो शख्स क्या उसके खानदान से लड़ जाता है।
मेरे मुस्कुराने से उसकी सांसों की गिनती बढ़ जाती है,
इतनी अहम हूँ मैं उसके लिए,

वो ये बात मुझे बैठकर प्यार से समझाता है, मोहब्बत है तुमसे कभी खुलकर बोल नहीं पाता।

मगर यकीन करें ये बोलने से पहले मुझे एहसास कराता है,
सारे जहां की खुशियां इकट्ठी करके उसके कदमों में रख दूँ ऐसा मेरा भी दिल करता है।
मैं वाकई खुशनसीब हूँ कि वो मुझे खोने से डरता है,
आजमाइश मैं भी क्यों करूँ उसकी,
जिसे देख इतना प्यार करता हूँ कहकर,
अपने दिए प्यार को कभी नहीं नापा,
लो आज सबके सामने कहती हूँ मैं भी आपसे बेइंतहा मोहब्बत करती हूँ पापा।



सुश्री श्रुति आनंद
पुत्री श्री सुनील कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी



भय से क्षय, रहें निर्भय

जब हम भूतकाल में की गई जानी-अनजानी गलतियों, गलत निर्णयों और अपने साथ होने वाले नाइंसाफियों, दुर्भाग्यों को याद करते हैं तो अनायास ही उदास हो जाते हैं। साथ ही जब हम भविष्य में होने वाली परेशानियों, आगत-अनागत समस्याओं पर मनन करते हैं तो अनायास ही चिंतित हो जाते हैं। मेरे ख्याल में आप अपने अतीत को बदलने का माद्दा नहीं रखते क्योंकि घटित पल कभी बदल नहीं सकता। साथ ही भविष्य में भी जो होना होगा वो तो होकर रहेगा। इसलिए उदास या चिंतित होना छोड़ वर्तमान में जीना सीखें और शांति पूर्वक रहें। साथ ही वर्तमान में किए गए कर्मों से अपने भविष्य को संवारने की कोशिश करते रहें। लोगों की यह फितरत होती है कि वे करीब निन्यानवे प्रतिशत मामलों में उन बातों के लिए चिन्तित रहते हैं जो भविष्य में होता ही नहीं है। कभी भी कोई स्वास्थ्य संबंधी जांच कराये जाने पर हम हमेशा चिन्तित रहते हैं कि रिपोर्ट कैसा आयेगा। बिना जांचे अपने से भयंकर बीमारियों के भय के साथे में जीते रहते हैं। प्रतियोगिता परीक्षा देने पर हमेशा असफल होने का ही भय सताते रहता है। हमारे अन्दर पराजय का भय इतना घुस गया है कि हर पल डर के साथे में ही जीना पड़ता है। इस संबंध में बचपन में सुनी एक कहानी याद आ रही है। वर्तमान चीन में एक समय प्रसिद्ध दार्शनिक संत कन्फ्यूशियस हुआ करते थे। एक बार फारस (वर्तमान ईरान देश) देश के राजा ने उनकी ज्ञान की परीक्षा लेनी चाही। फारस के राजा के बुलावे पर कन्फ्यूशियस यहां पहुंचे। उनके जाने पर राजा ने उनके सामने तीन पिंजड़े रखे, जिनमें से एक में एक चूहा था, जिसके पास सुन्दर खाद्य पदार्थ रखे हुए थे। दूसरे पिंजड़े में एक बिल्ली थी, जिसके सामने दो कटोरियां में दही और दूध रखा हुआ था। तीसरे में एक बाज पक्षी था, जिसके पास मांस का टुकड़ा रखा हुआ था लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि पिंजड़ों में रखे पदार्थों की ओर वे देख तक नहीं रहे थे।

राजा ने कन्फ्यूशियस से प्रश्न किया, "क्या कारण है कि इन तीनों में से कोई भी अपने प्रिय खाद्य पदार्थ को नहीं खा रहा है?" सन्त ने उत्तर दिया, "चूहें और बिल्ली को वर्तमान का भय है जबकि बाज को भविष्य का और यह भय लोभमिश्रित है। चूहे और बिल्ली को भय है कि कहीं बाज उन पर झपट न पड़े इसलिए वे सोचते हैं कि जब मरना है तो भूखे ही क्यों न मरे? इधर बाज यह सोच रहा है कि कहीं सामने आया हुआ

शिकार (चूहा और बिल्ली) निकल न जाए इसलिए उसका ध्यान उनके पिंजड़े की ओर है। इस प्रकार तीनों भयग्रस्त हैं और यदि उन्हें इसी प्रकार रहने दिया जाए तो वे सामने रखी हुई भोजन सामग्री की उपेक्षा कर मिथ्या भय के कारण भूखों मर जाएंगे।"

हमने कहानी से यह निष्कर्ष निकाला कि यदि आप वर्तमान हो या भविष्य, हमेशा आगत-अनागत अज्ञात भय के साथे में ही जीते रहेंगे तो कभी अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते उल्टे अपने-आप को मिटा ही देंगे। सच ही है कि भय से ही दुःख आते हैं और भय से ही मौत होती है।

वीर पुरुष कभी भयभीत होकर अपना आपा नहीं खोते बल्कि धैर्य धारण कर मुसीबतों का बहादुरी से मुकाबला करते हैं। वे कभी अनावश्यक बिना बात के भयभीत नहीं रहते बल्कि अगर मुसीबत सामने आ भी जाती है तो उसका समुचित उपाय अपनी बुद्धि बल से ढूंढते हैं। इस संबंध में एक बड़ा ही बढ़िया उदाहरण मैं देना चाहूंगा।

विश्वयुद्ध से संबंधित एक प्रसंग है। जर्मन सेनापति रोमेल अद्वितीय सूरमा थे। एक बार मीलॉ फैले रेगिस्तान में उनकी सेना के पास युद्ध-सामग्री समाप्त हो गई। दूसरी ओर सुव्यवस्थित अंग्रेजी सेना बढ़ी आ रही थी। जर्मन सेना में खासी घबराहट छा गई। सवाल उठा कि अब क्या किया जाए? सेनापति को सेना ने बताया कि हमारे पास तोपें तो हैं लेकिन गोला-बारूद नहीं। जर्मन सेनापति रोमेल ने दो क्षण विचार किया और बोले, "गोली न सही रेत तो है। उसी का उपयोग करो, घबराओ मत।" फिर तो कमाल हो गया। रोमेल के आदेश पर जर्मन सेना तोपों में बालू भरकर, बालू के टीलों पर दनादन दागने लगी। जोरदार गड़गड़ाहट सुनकर और उड़ती रेत-धूल देखकर अंग्रेजी सेना के हाथ-पांव फूलने लगे। उन्होंने सोचा-हो न हो, जर्मनी की विशाल सेना लड़ने के लिए दौड़ी आ रही है। अंग्रेजी सेना भय से दबे पांव वापस भाग खड़ी हुई। बिना युद्ध के संसाधनों के सिर्फ धैर्य रखने से ही जर्मन सेनापति के सूझ-बूझ ने हारी हुई बाजी पलट दी।

यही चीज हम सबके जीवन में भी लागू होता है कि संकट के समय जो घबरा गये, वे कभी इससे उबर नहीं पाते बल्कि जिन्होंने संकट के आ जाने पर उसका धैर्यपूर्वक मुकाबला करते हैं वहीं अक्सर न सिर्फ जीतते हैं बल्कि हारी हुई बाजी पलट देते हैं।

साथ ही ये बिल्कुल सच है कि आशा जब भय से उत्पन्न होती है तो यह उज्ज्वलतम होती है।



श्री इंद्र कुमार झा
वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी



शादी की 25^{वीं} सालगिरह (हास्य नाटक)



श्री कुंदन कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा
अधिकारी

त्रिलोकी- “अनु.., अनु.. कहाँ हो. मुझे तुमसे कुछ कहना है।
प्लीज, ना मत कहना”

अनु- “हाँ जानू. कहो, कहो ... कुछ विशेष बात मुझसे कहना चाहते हो क्या?”

त्रिलोकी- “अनु.., हमदोनों की शादी के 25 वर्ष पुरे होने में अभी पन्द्रह वर्ष का समय शेष है। परन्तु मैं, इस वर्ष 18 नवम्बर को, अपनी शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट करना चाहता हूँ?”

अनु (हँसते हुए)- “18 नवम्बर और इस वर्ष ! वाह... तुम भी अच्छा मजाक कर लेते हो। अभी तो, हमारी शादी के केवल 10 वर्ष हुए हैं और तुम शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट करने की बात कर रहे हो। मेरे प्यारे जानू.. हम दोनों शादी की 25वीं सालगिरह जरूर मनाएंगे। मगर जानू पन्द्रह वर्ष का इंतजार के बाद।

त्रिलोकी- “अनु मैं.....

अनु (बीच में रोकते हुए)- हाँ, तुम्हें तो हम दोनों की शादी की तारीख भी याद नहीं है। हमारी शादी, 18 नवम्बर को कब हुई थी? हम दोनों की शादी तो दो दिसंबर को हुई थी। जानू लगता है, हम दोनों की शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेशन के दिन आते-आते, तुम कहीं. मुझे भी भूल न जाओ?”

त्रिलोकी- “नहीं अनु. नहीं... मैं, तुम्हें भूल जाऊँ। ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं, अब तुम्हारे सिवा किसी के बारे में सोच नहीं सकता।

अनु (हँसते हुए)- “चलो तुम सुधर रहे हो।”

त्रिलोकी- “ऐसा है अनु, मेरी उम्र अभी संतावन वर्ष है। और पन्द्रह वर्ष आते-आते, मैं बहत्तर वर्ष का हो जाऊँगा। मुझे लगता है, बहत्तर की उम्र आते-आते, कहीं, मैं भगवान का प्यारा न हो जाऊँ।”

अनु- “जानू..., आज, तुम्हें क्या हो गया है? कैसी बातें कर रहे हो? ऐसा क्यों सोचते हो? तुम बिल्कुल स्वस्थ हो। हम दोनों के 10 वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट करने पर दोस्त और रिश्तेदार तो हमारा केवल मजाक उड़ाएंगे..?”

त्रिलोकी- “प्लीज अनु.. प्लीज, मेरी बात मान जाओ। मुझे 18 नवम्बर को अपनी शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट करने दो। मैं तुमसे रिक्वेस्ट करता हूँ। मुझे नहीं लगता है कि मैं बहत्तर वर्ष की उम्र तक जीवित रह पाऊँ।”

अनु- “हे भगवान, शादी की 25वीं सालगिरह और 10 वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद? वह भी 18 नवम्बर को? जबकि हम दोनों की शादी तो दो दिसंबर को हुई है। तुमने, न जाने किस विकट स्थिति में मुझे ला खड़ा किया है।

त्रिलोकी- “प्लीज अनु प्लीज”।

अनु - “जाओ, जानू... तुम्हारी जैसी मर्जी है वैसी हीं करो। परन्तु, हमलोग शादी की 10वीं सालगिरह हीं सेलिब्रेट करेंगे। वह भी 18 नवम्बर नहीं बल्कि दो दिसंबर को।

त्रिलोकी- “अनु.., ऐसा है। दो दिसंबर से पहले, मुझे ऑफिस के कार्य से दो सप्ताह के लिये बेंगलोर जाना है। इसलिए अनु.., मैं चाहता हूँ कि 18 नवम्बर को हीं शादी की सालगिरह सेलिब्रेट कर लूँ और अपने रिश्तेदार और दोस्तों को बुला लूँ।

अनु - “यह कैसे हो सकता है?”

त्रिलोकी - “हाँ जानू, वैसे भी 18 नवम्बर का दिन, हम दोनों के लिये खास है क्योंकि उसी दिन मेरी, तुमसे पहली मुलाकात हुई थी। प्लीज, अनु मेरी बात मान जाओ। मैं, तुमसे रिक्वेस्ट करता हूँ। हम दोनों 18 नवम्बर को हीं शादी की सालगिरह सेलिब्रेट करते हैं।

अनु - “चलो ठीक है... जैसी, तुम्हारी मर्जी। जिन रिश्तेदार और दोस्तों को निमंत्रण भेजना है, उन्हें निमंत्रण तुरंत भेज दो। आज चार अक्टूबर है, 18 नवम्बर आने में तो बस एक महीने हीं बचे हैं।

त्रिलोकी - “हाँ, अनु अब तो केवल एक महीना हीं बचा है।”

अनु- “मेरे दीदी और जीजा जी दरभंगा से आयेंगे और तुम्हारे फूफा जी झुमरीतिलैया से आयेंगे। उन सबों को, समय से निमंत्रण दोगे, तभी, वे फ्लाइट या ट्रेन टिकट की व्यवस्था कर

पायेंगे।

त्रिलोकी- “तुम बिल्कुल ठीक बोल रही हो, मुझे, उन्हें आज ही निमंत्रण भेज देना चाहिये. तभी तो वे यहाँ आने का प्रोग्राम आसानी से बना पाएंगे”।

अनु- “याद है तुमने, हमारी शादी के वक्त फूफा जी को, देर से निमंत्रण भेजा था। जिस वजह से, फूफा जी शादी में नहीं पहुँच सके थे। फूफा जी, न जाने कितने दिनों तक हमलोगों से मुहँ फुलाए बैठे थे” !

त्रिलोकी (हँसते हुए)- “हाँ अनु.. इस बार ऐसा नहीं होगा. हाँ, तुमने एक कहावत सुना होगा? शादी में चार चीज जरूरी है -पहली मेहंदी, दूसरी संगीत, तीसरी बारात और चौथी एक मुहँ फूलाने वाले फूफा जी...।

(दोनों हँसते हैं)

त्रिलोकी- “मैं झुमरीतिलैया वाले फूफा जी को आज ही निमंत्रण दे देता हूँ”।

त्रिलोकी- “फूफा जी, फूफा जी....., मैं त्रिलोकी बोल रहा हूँ मेरा चरण प्रणाम स्वीकार कीजिये. आप कैसे हैं? आपकी तबियत कैसी है? फूफा जी ठीक हैं न?

फूफा जी- “हाँ त्रिलोकी बेटा, खुश रहो बेटा... खुश रहो। मैं बिल्कुल ठीक हूँ तुम्हारी फूफा की तबियत आजकल थोड़ी ढीली चल रही है। तुम कैसे हो बेटा? इतने दिनों के बाद फूफा

जी की कैसे याद आई?

त्रिलोकी- “फूफा जी, एक शुभ समाचार देने की लिये, मैंने, आपको फोन किया है। मैं शादी की 25वीं सालगिरह 18 नवम्बर को सेलिब्रेट करने जा रहा हूँ आपको फूफा जी को साथ लेकर जरूर आना है। शादी की 25वीं सालगिरह का डेट भूलियेगा नहीं, 18 नवम्बर, 18 नवम्बर..”। ..

फूफा जी- “बेटा. तेरा शादी के 25 वर्ष कब पूरे हो गये? समय बीतते देर नहीं लगाती है। त्रिलोकी बेटा.., यदि, तेरे शादी के 25 वर्ष पूरे हो गये हैं। तब तो, मेरी उम्र 90 वर्ष पार कर गई है।

त्रिलोकी- “90 वर्ष आपकी उम्र”?

फूफा जी- “मगर बेटा 90 वर्ष की उम्र में, मेरा सरकारी पेंशन जिस तरह से बढ़ना चाहिये, उस तरह से बढ़ा नहीं। इस बार बैंक जाकर, बैंक मैनेजर की खबर लेता हूँ मैनेजर बातें तो बड़ी मीठी-मीठी करता है, मगर मेरी पेंशन समय से जिस तरह बढ़ना चाहिये, उस पर ध्यान नहीं देता है. वैसे बेटा..., 90 वर्ष के उम्र में, मेरे लिये उतनी दूर पहुँचना संभव कहाँ है”?

त्रिलोकी- “मगर फूफा जी, अभी तो आपकी उम्र 75 वर्ष ही हुई है? 90 वर्ष की उम्र होने में तो अभी पंद्रह वर्ष देर है।

फूफा जी- “यदि मेरी उम्र 90 वर्ष नहीं हुई तो तेरे शादी के 25 वर्ष कैसे पूरे हो गये त्रिलोकी? तुम तो मुझे जल्दी ऊपर भेजना चाहते हो।



त्रिलोकी- “फूफा जी.. प्लीज, आप बस 18 नवम्बर को पहुँच जाइये। बाकि, खुद-ब-खुद आपको सारी बातें समझ में आ जायेगी। आप तो मेरी शादी के वक्त भी नहीं आये थे।”

फूफा जी- “हाँ बेटा, तुमने, हमेशा अपने हर एक शुभ कार्य पर, चाहे देश में रहे हो या विदेश में, मुझे निमंत्रित करते रहे हो। इस बार आने की पूरी कोशिश करूँगा।”

त्रिलोकी- “फूफा जी आपको आना ही होगा”.

फूफा जी- “बेटा, तुम अपनी छोटकी फूआ कोयल को जरूर निमंत्रण भेज देना। कोयल से मिले न जाने कितने वर्ष हो गये हैं। मैं जब ससुराल जाता था। कोयल ही एक साली थी। जो मेरा मन बहलाया करती थी। कोयल के चलते ही, मैं अक्सर ससुराल जाया करता था। कोयल को हसबैंड बड़ा खडूस मिला है। हमसे तो कोयल के हसबैंड का कभी पटा ही नहीं”।

त्रिलोकी- “अच्छा, फूफा जी फोन रखता हूँ। अभी मुझे अपने दोस्तों को भी निमंत्रित करना है”।

फूफा जी- “ठीक है त्रिलोकी बेटा, मगर कोयल को याद से निमंत्रण भेज देना”।

त्रिलोकी (फोन रखते हुये)- “फूफा जी 75 वर्ष की उम्र पार कर रहे हैं। लेकिन, अभी भी कोयल, कोयल..... की रट लगाये हुये हैं। कोयल फूआ को तो मैं किसी भी हालत में निमंत्रण नहीं भेजने वाला हूँ। जिन्होंने, हमारे हर एक खुशी का मजाक उड़ाया है। चलो अब विनोद को निमंत्रित करता हूँ”।

त्रिलोकी- “विनोद कैसे हो भाई? मैंने, एक निमंत्रण देने के लिये तुम्हें फोन किया है”।

विनोद - “भाई त्रिलोकी, मैं बड़े मजे में हूँ। बताओ, बताओ.. भाई त्रिलोकी। किस खुशी में निमंत्रण दे रहे हो। वैसे भी त्रिलोकी तुमने, बहुत दिनों से, कोई पार्टी-वार्टी नहीं दिया है”।

त्रिलोकी- “भाई विनोद, मैं अपनी शादी की 25वीं सालगिरह 18 नवम्बर को सेलिब्रेट करने जा रहा हूँ। विनोद तुम्हें, भाभी जी और बच्चों को लेकर शादी की सालगिरह पार्टी में जरूर आना है। समारोह-स्थल का लोकेशन, मैं, तुम्हें व्हाटसप् के माध्यम से बाद में भेज दूँगा”।

विनोद (आश्चर्य से)- “शादी की 25वीं सालगिरह ! त्रिलोकी तुम्हारी शादी के 25 वर्ष कब पूरे हो गये जी? तुम तो हमें कुछ दिन पहले बताये थे कि तुम्हारी शादी के अभी 10 वर्ष हुए हैं? त्रिलोकी तुम शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट कर रहे हो या शादी की 10वीं सालगिरह?

त्रिलोकी- “हाँ-हाँ विनोद, शादी की 25वीं सालगिरह। विनोद

अभी मैं, तुम्हारे किसी बात का जवाब नहीं दे सकता। तुम भाभी जी और बच्चों को लेकर अवश्य आना। मुझे अभी और लोगों को निमंत्रित करना है”।

अनु (धीरे से)- “जानू हम दोनों शादी की 10वीं सालगिरह सेलिब्रेट करने जा रहे हैं .., शादी की 25वीं सालगिरह नहीं”। 25वीं.. 25वीं की रट लगाये बैठे हो।

त्रिलोकी- “अनू..”

अनु- “फूफा जी को 18 नवम्बर का निमंत्रण, शादी की 25वीं सालगिरह का मत भेज देना। वरना सभी दोस्त और रिश्तेदार, हम दोनों का मजाक उड़ायेंगे। हाँ, दरभंगा वाले जीजा-जी को निमंत्रण तुम्हीं भेज देना। जीजा-जी से बहुत दिनों से हमलोग मिले नहीं हैं”।

त्रिलोकी (धीरे से बोलते हुए)- “अनु के दरभंगा वाले टकला जीजा जी, झुमरीतिलैया वाले फूफा जी से कुछ कम थोड़ी हैं? मेरे और अनु की शादी के बाद भी, अनु के दरभंगा वाले टकला जीजा-जी, अनु से घंटो फोन पे बातें किया करते थे।

अनु- “कुछ बोल रहे हो क्या जानू?”

त्रिलोकी (धीरे से बोलते हुए)- “नहीं...नहीं..। मैं ही जीजा-साली के रिश्ते को लेकर, एक बार दरभंगा वाले टकला जीजा-जी से उलझ पड़ा था। मैं जानता हूँ, निमंत्रण देने पर झुमरीतिलैया वाले फूफा जी आयें-या न आयें? परन्तु अनु के दरभंगा वाले टकला जीजा-जी, ससुरा जरूर पहुँच जायेगा।

अनु- “क्या हुआ जानू, क्या सोच रहे हो?”

त्रिलोकी (धीरे से बोलते हुए)- “मैं भी कोई कम थोड़ी हूँ। जीजा जी को 25वीं सालगिरह का निमंत्रण तो मैं जरूर भेजूँगा। लेकिन थोड़ी लेट से। कम से कम इस प्रकार फ्लाइट के टिकट की कीमत बढ़ जाएगी और दरभंगा वाले टकला जीजा-जी को, यहाँ आने के लिये सोचने पर मजबूर होना पड़ेगा”।

विनोद अपनी पत्नी से- “अजी, सिट्टी की मम्मी सुनती हो... एक अनोखा निमंत्रण आया है। हमारे ऑफिस का मित्र त्रिलोकी, अपनी शादी की 25वीं सालगिरह 18 नवम्बर को सेलिब्रेट करने जा रहा है”।

विनोद की पत्नी (कमरे के अन्दर से ही बोली)- “हाँ-हाँ.., सुन रही हूँ। बताओ-बताओ, क्या बोल रहे हो?”

विनोद- “अभी-अभी, त्रिलोकी ने हमलोगों को, अपनी शादी की 25वीं सालगिरह पर आने का निमंत्रण दिया है। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि त्रिलोकी की शादी के 25 वर्ष कब पूरे हो गये, जबकि, कुछ दिन पहले ही त्रिलोकी ने, अपनी शादी के 10 वर्ष पूरे होने

की बात मुझे बताई थी।

विनोद की पत्नी (कमरे के अन्दर से)- “शादी की 25वीं सालगिरह.., वह भी शादी के केवल 10 वर्ष बाद... हे भगवान ! यहाँ लोग, न जाने क्या-क्या नई-नई रिवाज को बढ़ावा दे रहे हैं? हमारा देश आगे बढ़ रहा है, इसका यह कतई मतलब नहीं है, देश, इस तरह आगे बढ़ेगा।

विनोद- “हम लोगों ने भी अपनी शादी की 25वीं सालगिरह भव्य रूप से सेलिब्रेट करने को सोचा था, परन्तु, कोविड का पीरियड शुरू हो जाने की वजह से, हमने हल्के-फुल्के में ही, अपनी शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट कर लिया था”।

विनोद की पत्नी (कमरे के अन्दर से)- “जाने दो, त्रिलोकी जी की जैसी मर्जी.... हमें, थोड़ी मस्ती करने का मौका तो मिलेगा। त्रिलोकी जी को इस निमंत्रण के लिये, मेरी तरफ से, उन्हें धन्यवाद बोल देना”।

विनोद- “सिद्धी की मम्मी, धन्यवाद तो बाद में..., पहले यह कन्फर्म हो जाने दो कि 10 वर्ष के वैवाहिक जीवन के बाद ही त्रिलोकी शादी की 25वीं सालगिरह कैसे सेलिब्रेट कर रहा है? मैं पहलवान भाई से फोन पे बात करता हूँ त्रिलोकी ने, उसे भी निमंत्रण अवश्य भेजा होगा”।

(विनोद और पहलवान भाई की फोन पे वार्तालाप)

विनोद- “पहलवान भाई....पहलवान भाई..., अरे भाई त्रिलोकी पगला गया है क्या? त्रिलोकी की शादी की 25वीं सालगिरह का निमंत्रण तुम्हें मिला है?... और क्या यह सच है? मैं तो भाई पूरी तरह से कंप्यूज्ड हूँ”

पहलवान भाई- “हाँ, विनोद, त्रिलोकी ने, हमें भी निमंत्रित किया है”

विनोद- “जिस त्रिलोकी ने, अभी, अपनी शादी के मात्र 10 वर्ष पुरे किये हों, शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट करने को कैसे सोच सकता है?

पहलवान भाई- “18 नवम्बर का निमंत्रण, उसने शादी की 25वीं सालगिरह कहकर ही दिया है, परन्तु, यह क्या मजाक है? त्रिलोकी की शादी के 25 वर्ष कब पूरे हो गये, जबकि, कुछ दिनों पहले, त्रिलोकी ने हमें भी बताया था कि उसके, अनु के साथ शादी के अभी मात्र 10 वर्ष हुये हैं।

विनोद- “यदि एक अप्रैल का दिन बताया होता, तो समझ में आता कि त्रिलोकी मजाक कर रहा है, वैसे भी, 18 नवम्बर का समय खरमास का होता है। त्रिलोकी ने खरमास में कैसे शादी कर ली।

पहलवान भाई- “खरमास के महीने में, तो शुभ कार्य का आयोजन होते नहीं हैं। मुझे लग रहा है, त्रिलोकी ने, हम सबों को वेवकूफ बनाने की योजना बनाई है, जबकि, इस तरह का मजाक, त्रिलोकी के स्वभाव में नहीं हैं भाई”।

विनोद- “विदेश में रह कर आया है। इसका यह मतलब नहीं न है कि त्रिलोकी यहाँ उल्टा-पल्टा काम करेगा? शादी की 25वीं सालगिरह का मतलब है की शादी के 25 वर्ष पूरे हो गये हों। वह थोड़ा सनकी भी है। त्रिलोकी को समझाना और कलकत्ता पैदल जाना बराबर है भाई”।

पहलवान भाई- “भाई विनोद, एक मेरी शादी की सालगिरह है। अक्सर सालगिरह वाले दिन मेरी पत्नी गांव पर रहती है और मैं शहर में। कभी-कभी साथ रहने का मौका भी मिलता है तो उस दिन घर में खीर-पूरी बनती है और हम सब मजे-मजे खाकर शादी की सालगिरह सेलिब्रेट कर लेते हैं।

विनोद- “खीर-पूरी? तूने तो मुझे कभी खिलाया नहीं”?

पहलवान भाई- “कई बार, मैंने पत्नी से बोला है कि हमसब भी थोड़ी धूम-धड़ाका वाली शादी की सालगिरह सेलिब्रेट कर लेते हैं। वह कहती है, शहर के वातावरण से दूर ही रहो। देखो तिवारी जी को, 25 वर्ष शहर में रहकर, गांव में 25 बीघा खेत खरीद ली है।

विनोद- “सचमूच, तिवारी ने, अपने बाल-बच्चों के लिये कितना अच्छा प्लान किया है।

पहलवान भाई- “पत्नी बोलती है, एक तुम हो शादी की सालगिरह, शादी की सालगिरह... की रट लगाए फिरते हो। वह कहती है, हमारा तो जो होना था वह हो गया। अपने बच्चों के भविष्य के बारे में सोचो”।

विनोद- “अच्छा पहलवान भाई, फोन रखता हूँ। उस दिन जो होगा देखा जाएगा। लेकिन हम तुमसे वादा करते हैं। त्रिलोकी के शादी की 25वीं सालगिरह से लौटने के बाद, सिद्धी की मम्मी, तुम्हारी बीबी को गांव से बुलाएंगी, और हम, तुम्हारी भी शादी की सालगिरह का शौक जरूर पूरा करवा देंगे और खीर-पूरी तो खायेंगे हीं।

(दोनों हंसते हैं)

(कुछ दिन बाद, 18 नवम्बर का वह दिन भी आ गया, जब त्रिलोकी, अपनी केवल 10 वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद, शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट करने जा रहा है)

विनोद- “सिद्धी की मम्मी, सिद्धी की मम्मी.. आज का दिन तो 18 नवम्बर है, त्रिलोकी के शादी की 25वीं सालगिरह आज ही

है न ?

विनोद की पत्नी- “लो शादी की 25वीं सालगिरह वाला दिन भी आ गया”

विनोद- “ऐसा करता हूँ, फोन पे, त्रिलोकी को बधाई भी दे देता हूँ और कन्फर्म भी हो लेता हूँ कि सच में त्रिलोकी केवल अपनी 10 वर्षों की वैवाहिक जीवन के बाद, शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट कर रहा है”?

(विनोद फोन पे त्रिलोकी से बात करते हुये)

विनोद- “शादी की 25वीं सालगिरह बधाई हो, बधाई हो त्रिलोकी भाई....भाई, समारोह स्थल, वही है न, जो लोकेशन तुमने व्हाटसप्प पर हमें भेजा है और सारी तैयारियां ठीक-ठाक चल रही है न”?

त्रिलोकी- “थैंक यू भाई ... हाँ. तैयारी बहुत अच्छी है। मगर भाई देर मत करना, समय से भाभी जी और बच्चों को साथ लेकर आ जाना”।

त्रिलोकी खुद से बोलते हुए- “आज सुबह से लोग, बधाई देने के बहाने, यह कन्फर्म होने में लगे हैं कि क्या, मैं, सचमुच शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट करने जा रहा हूँ?”।

(शादी के सालगिरह स्थल पर मेहमानों का धीरे-धीरे आना शुरू हो गया है। सभी, इस अनोखी शादी के सालगिरह के प्रति काफी रोमांचित हैं)।

विनोद (समारोह स्थल की व्यवस्था देख)- “अऊ, खाने के लिये कितने स्वादिष्ट राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय व्यंजन के स्टाल लगे हैं और क्या भव्य सजावट है। यह विहंगम दृश्य, त्रिलोकी के शादी की 25वीं सालगिरह को आकर्षक बना रहा है। परन्तु... मुझे, यह समझ नहीं आ रहा है जबकि, अभी त्रिलोकी की शादी के 10 वर्ष ही पूरे हुए हैं, वह शादी की 25वीं सालगिरह कैसे सेलिब्रेट कर रहा है?

पहलवान भाई- “छोड़ विनोद भाई इन बातों को, त्रिलोकी 10 वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद अपनी शादी की सिल्वर जुबली सेलिब्रेट करता है या शादी की डायमंड जुबली सेलिब्रेट करता है। यह, उसकी मर्जी है।

विनोद- “तुम ठीक कहते हो”।

पहलवान भाई- “मुझे तो अब स्वादिष्ट व्यंजन का सुगंध बर्दाश नहीं हो रहा है। आओ हम सब, परिवार के साथ स्वादिष्ट राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय व्यंजन का मजा लेते हैं और सिल्वर जुबली समारोह का आनंद लेते हैं”।

विनोद- “शौक भी गजब चीज है पहलवान भाई। त्रिलोकी ने शादी की 25वीं सालगिरह में स्वादिष्ट राष्ट्रीय व्यंजन का जो अरेंजमेंट किया है। उसका मतलब तो समझ में आता है। लेकिन अन्तर्राष्ट्रीय व्यंजन के अरेंजमेंट का मतलब समझ में नहीं आया।

पहलवान भाई- “इस तरह के भव्य शादी की सालगिरह समारोह करके, यह त्रिलोकी 25 बीघा जमीन क्या खरीदेगा, यह तो अपने पिता जी की गाढ़ी कमाई से खरीदी गई 25 बीघा जमीन को बेचवा देगा”।

(सिल्वर जुबली का ग्रैंड सेलिब्रेशन अनाउंसमेंट के साथ शुरू हो गया है। अनाउंसर अपने सुन्दर-सुन्दर सम्बोधन से सबों का मन मोह रही है। स्टेज, पर्दा से ढंका है)। अनाउंसर-

“तुम मेरी जिंदगी को रोशन करती हो-2,

ठीक वैसे ही जैसे हमारी तस्वीरों में मुस्कुराहटें हैं-2

स्वागत-स्वागत-स्वागत. वेलकम-वेलकम-वेलकम.....”

“शादी की 25वीं सालगिरह, शादी की सिल्वर जुबली”

“एक नहीं... दो नहीं... कुल तीन”

“अनोखी है, सच है, बिल्कुल नया है “

“हमारे देश में न रे बाबा न...”.

विनोद- “अनाउंसर, क्या पहेलियाँ बुझा रही है, मुझे, कुछ समझ में नहीं आ रहा है। बाबा-रे-बाबा यहाँ तो केवल कंप्यूजन ही कंप्यूजन हैं”।

पहलवान भाई- “अनाउंसर को अनाउंसमेंट के लिये मोटी रकम जो दिये गये होंगे, थोड़ी देर तो शादी के 25वीं सालगिरह को लेकर, लोगों का मनोरंजन तो करेगी ही न”।

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटिल मैन, त्रिलोकी जी की शादी के 25वीं सालगिरह के शुभ अवसर पर, यहाँ आपसबों का उपस्थित होने पर, मैं, त्रिलोकी जी के तरफ से हार्दिक-हार्दिक-अभिनन्दन, स्वागत करती हूँ

विनोद- “सच में शादी की 25वीं सालगिरह”?

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटिल मैन, मैं जानती हूँ, आपलोगों को, त्रिलोकी जी की इस सिल्वर जुबली समारोह को लेकर मन में बहुत उत्सुकता है, जिस त्रिलोकी जी ने, अपनी शादी के अभी मात्र 10 वर्ष पूरा किया है। उन्होंने, शादी की 25वीं सालगिरह का निमंत्रण भेजकर, आपसबों को, यहाँ कैसे बुलवाया”?

पहलवान भाई- “हाँ, हाँ वही तो समझने के लिय हमसब वेसब्री से इंतजार कर रहे हैं”।

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटल मैन, त्रिलोकी जी ने, अपनी इस अनोखी सिल्वर जुबली सेलिब्रेशन के लिए महीने-भर जमकर तैयारियां किया है। त्रिलोकी जी को यह पसंद नहीं था कि वे बहत्तर के उम्र में, अपनी शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट करें। परन्तु, त्रिलोकी जी की 25वीं सालगिरह का औचित्य है।

विनोद- “वह कैसे?”

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटल मैन, त्रिलोकी जी, विदेश से नौकरी कर भारत लौटे हैं। यहाँ, वे कई शादी की 25वीं सालगिरह समारोह में शामिल हो चुके हैं। उन्हें भी, अपनी शादी की सिल्वर जुबली सेलिब्रेट करने की व्याकुलता थी। परन्तु, त्रिलोकी जी को समझ में नहीं आ रहा था कि वह, अपनी इस व्याकुलता को कैसे दूर करें, जबकि, त्रिलोकी जी की शादी के 25 वर्ष पूरे होने में, अब भी पन्द्रह वर्ष शेष हैं।

विनोद- “पन्द्रह वर्ष शेष और शादी की 25वीं सालगिरह !

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटल मैन, अभी त्रिलोकी जी की उम्र संतावन वर्ष है, उनकी शादी के 25 वर्ष पूरा होने में पन्द्रह वर्ष शेष हैं। इस प्रकार बहत्तर वर्ष के उम्र में, त्रिलोकी जी अपनी शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट कर पाते, जिस उम्र में, हमारे देश में लोग शादी की 50वां सालगिरह सेलिब्रेट करना शुरू कर देते हैं।

पहलवान भाई- “बिल्कुल सही कहा आपने”.

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटल मैन, त्रिलोकी जी के दिमाग में एक आईडिया आया और उन्होंने, अपनी शादी के 25वीं सालगिरह की योजना बना डाला”।

विनोद- “कैसी योजना है?”

अनाउंसर- “त्रिलोकी जी की पत्नी अनु नहीं चाहती थीं कि केवल 10 वर्षों के वैवाहिक-जीवन के बाद वे शादी के 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट करें। परन्तु, जब त्रिलोकी जी ने, उनसे कहा कि बहत्तर के उम्र में, वे इस दुनिया में रहें या न रहें, तभी उनकी पत्नी अनु, इस सालगिरह के जश्न के लिये तैयार हो गई थीं”।

(स्टेज का पर्दा धीरे-धीरे हटा दिया गया था।)

अनु (धीरे से)- “जानू, यह अनाउंसर क्या आलतू-फालतू बके जा रही है, हमलोग तो शादी की 10वीं सालगिरह सेलिब्रेट कर रहे हैं और यह शादी की 25वीं सालगिरह का अनाउंसमेंट कर रही है, अनाउंसर को अपनी अनाउंसमेंट में सुधार लाने को कहो”।

त्रिलोकी (हँसते हुए)- “धैर्य रखो जानू.., थोड़ी देर में सारा माजरा समझ में आ जाएगा। हाँ, तुम्हारे दरभंगा वाले टकला

जीजा जी अभी तक नहीं पहुंचे। वे आते तो बड़ा मजा आता।

अनु (हँसते हुए)- “तुम्हें जीजा जी को टकला कहने में बड़ा मजा आता है ना अपने भी सर पर जरा हाथ फेर कर देख लो”।

विनोद- “पहलवान भाई, पहलवान भाई.. देखो-देखो, स्टेज पर दो नहीं, तीन नहीं कुल चार वेडिंग चेयर? दो वेडिंग चेयर पर त्रिलोकी और उनकी पत्नी अनु बैठे हैं ! एक वेडिंग चेयर पर एक विदेशी महिला सज-धज कर बैठी हैं और एक वेडिंग चेयर खाली पड़ी है !”

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटल मैन...

विनोद- “गुरु, मैं तो शुरू से ही इस सालगिरह समारोह के बारे में सोच-सोच कर कन्फ्यूज्ड हूँ, अब न जाने, त्रिलोकी अपनी शादी की 25वीं सालगिरह को लेकर यहाँ नया ड्रामा क्या खड़ा करने वाला है?”

पहलवान भाई- “सच में, बाबा रे बाबा, शादी की 25वीं सालगिरह... दो वेडिंग चेयर पर दो महिलायें, मतलब दो दुल्हन... एक दुल्हा.... और एक वेडिंग चेयर खाली पड़ी है ... यह सब क्या है?” मुझे भी, कुछ समझ में नहीं आ रहा है।

विनोद- “इन सब कंफ्यूजन से अच्छा है विनोद, हमलोग स्वादिष्ट राष्ट्रीय/अन्तर्राष्ट्रीय भोजन का आनंद लेते हैं”।

(अनु और त्रिलोकी के बीच धीरे-धीरे वार्तालाप)

अनु- “जानू, स्टेज पर चार वेडिंग चेयर क्यों रखे गये हैं और वह महिला स्टेज पर यहाँ क्या कर रही है?”

त्रिलोकी (हँसते हुए)- “वे मेरी विदेशी महिला मित्र हैं। जब, मैंने, उन्हें अपनी शादी के सालगिरह पर निमंत्रित किया, तो उन्होंने शर्त रखा, यदि सालगिरह सेलिब्रेशन वाले दिन, उन्हें भी वेडिंग चेयर पर बैठने दिया जायेगा, तभी वे, इंडिया, उनके शादी के सालगिरह में शामिल होने पहुंचेंगी”।

अनु- “जानू, स्टेज पर एक वेडिंग चेयर खाली पड़ी है, मैं अपनी मम्मी को बुलाकर, उस वेडिंग चेयर पर बैठा लूँ क्या? मम्मी को, इस तरह से इज्जत देने पर, उन्हें अच्छा लगेगा?”

त्रिलोकी (हँसते हुए)- “अनु, नहीं-नहीं...ऐसा कतई मत करना. वरना.., यह 25वां शादी की सालगिरह 50वीं शादी की सालगिरह में बदल जायेगा, थोड़ी धैर्य रखो, धीरे-धीरे, तुम्हें सब समझ में आ जायेगा”।

अनु- “मुझे, न तो अनाउंसर की बात समझ में आ रही है और न ही तुम्हारी। अच्छा हुआ मेरे दरभंगा वाले जीजा जी नहीं पहुंचे, उनका हल्का-फुल्का मजाक तो तुम्हें पसंद नहीं है। इस तरह के

शादी की सालगिरह आयोजन पर, जीजा जी न जाने मेरी कितना मजाक उड़ाते?"

(अनु की मोबाइल पे झुमरीतिलैया वाले फूफा जी का फोन आया)

फूफा जी- "बधाई हो अनु बेटा....., बधाई हो। तुम दोनों को शादी की 25वीं सालगिरह हृदय से मुबारक हो। तुम दोनों हमेशा खुश रहो। भगवन तुम दोनों को लम्बी उम्र दे। अनु बेटा, हम, तुम दोनों के शादी की 25वां सालगिरह में नहीं पहुँच सके। बेटा अनु....., जरा विडियो कालिंग कर, मुझे, वहां का समारोह का दृश्य दिखा दो।"

अनु- "प्रणाम फूफा जी... थैंक यू, थैंक यू.....लेकिन फूफा जी हमलोग तो शादी की 10वीं सालगिरह सेलिब्रेट कर रहे हैं।"

फूफा जी- "अरे बेटा कान से कम सुनाई पड़ती है। त्रिलोकी की बात मुझे ठीक से सुनाई नहीं दी होगी। उसने, शायद मुझे 10 वीं सालगिरह का ही निमंत्रण दिया होगा। कोयल फूआ आई है क्या?"

अनु- "फूफा जी... कोयल फूआ अब तक यहाँ नहीं पहुँची हैं।"

फूफा जी- "हाँ, कोयल से मेरी बात हुई है। वह, तुम्हारे यहाँ जाने में ना-नुकर कर रही थी। शायद, त्रिलोकी ने, उसे निमंत्रण देना भूल गया था। बेटा, कोयल के वहाँ नहीं पहुँचने के चलते, मेरा मन भी थोड़ा बदल गया। कोयल जाती तो मैं भी जरूर आता।"

(अनु ने अपनी फ्रेंड को विडियो कालिंग कर फूफा जी को स्टेज और चारों तरफ की दृश्य दिखाने को कहा)

फूफा जी- "रुको अनु बेटा रुको, जरा चश्मा लगा लेता हूँ। बिना चश्मा के तो दो वेडिंग चेयर की जगह चार वेडिंग चेयर नजर आ रही है.....अरे!, चश्मा से भी चार वेडिंग चेयर हीं नजर आ रहे हैं?"

अनु- "फूफा जी..."

फूफा जी- "जरा रुको बेटा.... अभी-अभी डा. माधव के यहाँ से जो नया चश्मा बनवाकर लाया हूँ, उससे देखता हूँ उससे वहाँ का माजरा साफ-साफ नजर आयेगा। (चश्मा पहनने के बाद)। अरे.. इससे भी चार वेडिंग चेयर, दो दुल्हन और एक दुल्हा त्रिलोकी नजर आ रहे हैं।"

अनु- "फूफा जी..."

फूफा जी- "डा. माधव ने, चश्मा बनाने के नाम पर अच्छा पैसा ऐंठा है। न जाने कैसा चश्मा बना दिया है? डॉक्टर पर भी आजकल भरोसा करना मुश्किल है। चलो, अनु बेटा बाद में

त्रिलोकी से बात कर उसकी शादी की 25वीं सालगिरह... नहीं बाबा... 10वीं सालगिरह की चर्चा कर लेंगे।"

त्रिलोकी- "अनु..., झुमरीतिलैया वाले फूफा जी क्या बोल रहे थे? इस बार मुँह तो नहीं फुलाये?"

अनु (हँसते हुए)- "तुमने, शायद कोयल फूआ को निमंत्रित नहीं किया, इसलिए फूफा जी थोड़ी नाराज हो रहे थे और उन्होंने, यहाँ आने का अपना प्रोग्राम कैंसल कर दिया।"

त्रिलोकी (हँसते हुए)- "बेचारे फूफा जी.. कोयल फूआ का इंतजार कर रहे थे।"

अनु - "वैसे, जीजा जी अबतक नहीं पहुँचे, उन्होंने, तो शादी की 10 वीं सालगिरह में आने का वादा किया था। तुमने, उन्हें, निमंत्रण देर से तो नहीं भेजा था?"

त्रिलोकी (हँसते हुए)- "पता नहीं तुम्हारे टकला जीजा जी को फ्लाइट का टिकट मिला भी या नहीं। वैसे भी मैंने तुम्हारे टकला जीजा जी को, तुम्हारे कहने पर शादी की 10 वीं सालगिरह का निमंत्रण भेजा था। यदि तुम्हारे टकला जीजा जी को शादी की 25वीं सालगिरह का निमंत्रण भेजा होता तो वे जरूर आते।"

अनु- "25वीं, 25वीं.. तुम हो या अनाउंसर या फूफा जी सभी शादी की 25वीं सालगिरह की रट लगाये बैठे हो।"

त्रिलोकी (हँसते हुए)- "अनु डार्लिंग, नाराज मत हो... बस थोड़ी देर और इंतजार कर लो। तुम्हें, सारी बात समझ में आ जाएगी।"

अनाउंसर- "लेडिज एंड जेंटल मैन, आइये अब मैं त्रिलोकी जी के इस शादी की 25वीं सालगिरह के सेलिब्रेशन को जस्टीफ़ाई करती हूँ। चौथी वेडिंग चेयर खाली न रह जाये, इसके लिये त्रिलोकी जी ने बहुत मेहनत किया था, परन्तु, लन्दन में रह रहे, त्रिलोकी जी की महिला मित्र मार्गट ने भारत आने से साफ़ मना कर दिया। इसी वजह से, यह वेडिंग चेयर खाली पड़ी है।"

(उपस्थित लोगों के बीच खड़ी होकर, एक विदेशी महिला ने आवाज लगाई)- "यस, आई एम मार्गट फ्रॉम लन्दन, आई एम प्रेजेंट हियरा मैं, त्रिलोकी की इस अनोखी शादी की 25वीं सालगिरह के सेलिब्रेशन में शामिल होने के लिये इंडिया आ गई हूँ, यह वेडिंग चेयर अब खाली नहीं रहेगी।"

(मार्गट धीरे-धीरे स्टेज तक जा पहुँची और त्रिलोकी और अनु को विश करते हुए, उस वेडिंग चेयर पर बैठ जाती हैं। त्रिलोकी, मार्गट का, इस समारोह में आने से बहुत खुश है। वह, बार-बार मार्गट के तरफ इशारा करते हुए उन्हें धन्यवाद दे रहे हैं।)

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटल मैन, त्रिलोकी जी, नौकरी के सिलसिले में, जब अमेरिका गये थे वहां, उन्होंने, अपने ऑफिस के मित्र मैग्नोलिया से पहली शादी 18 नवम्बर को ही की थी। इसलिए, उन्होंने शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेशन का दिन 18 नवम्बर तय किया। आठ वर्षों तक मैग्नोलिया के साथ सुखमय वैवाहिक जीवन व्यतीत करने के बाद, दोनों, आपसी सहमती से एक दूसरे से अलग हो गये थे। स्टेज के वेडिंग चेयर पर पहले से बैठी विदेशी महिला मैग्नोलिया हीं हैं।”

(मैग्नोलिया सबों को अभिवादन करते हुये)

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटल मैन, आइये हमसब मैग्नोलिया जी का स्वागत जोरदार तालियों से करते हैं। (जोरदार तालियों बजती हैं)

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटल मैन, अब जबकि मैग्नोलिया त्रिलोकी जी की पत्नी नहीं हैं। त्रिलोकी जी, उन्हें सालगिरह का पुष्पमाला तो नहीं पहना सकते हैं, परन्तु, उनका स्वागत, अनु जी, उनके गले में माला डालकर करेंगी।”

(अनु ने मैग्नोलिया के गले में पुष्पमाला पहनाया और दोनों गले मिले और त्रिलोकी जी ने उन्हें एक महंगी गिफ्ट भेंट कर स्वागत किया।)

मैग्नोलिया- “हैप्पी मैरिज एनिवर्सरी, त्रिलोकी- अनु, थैंक्स फॉर इन्वियटिंग मी ऑन दिस सिल्वर जुबली, आई एम वैरी हैप्पी, वैरी हैप्पी...।”

त्रिलोकी- “थैंक यू, थैंक यू मैग्नोलिया फॉर कर्मिंग इंडिया।”

अनु की ऊँगली में एक सुन्दर-सा रिंग पहनाते हुए मैग्नोलिया- “रेस्पेक्टेड फ्रेंड, दिस वन इज द सेम रिंग, व्हीच हेव बीन गिवेन टू मी बाई त्रिलोकी इन माई फर्स्ट मीटिंग इन अमेरिका। आज, मैं इस इम्पोर्टेंट गिफ्ट, उन्हें हीं रिटर्न कर रही हूँ।”

विनोद- “मैग्नोलिया जी, इतना इम्पोर्टेंट गिफ्ट, को कोई रिटर्न करते हैं क्या?”

मैग्नोलिया- “यस, मैने, केवल इस रिंग को ज्वैलर से कहकर हंड्रेड परसेंट प्योर करवा दिया है, क्योंकि जिस रिंग को त्रिलोकी ने हमें गिफ्ट किया था, उसकी प्यूरिटी में थोड़ी कमी थी। शायद त्रिलोकी के द्वारा मुझे गिफ्ट की गई रिंग की प्यूरिटी में थोड़ी कमी रह गई थी, जिस वजह से हीं, मेरी और त्रिलोकी का मैरेज लाइफ ऑनली एट इयर्स तक चली।”

विनोद- “रिंग की प्यूरिटी में कमी!”

मैग्नोलिया- “मैं त्रिलोकी को ब्लेम नहीं कर रही हूँ, अब जबकि यह रिंग हंड्रेड परसेंट प्योर है, त्रिलोकी और अनु की मैरेज

लाइफ पूरी स्ट्रोंग रहेगी और 50वां मैरेज एनिवर्सरी अनु हीं त्रिलोकी के साथ सेलिब्रेट करेंगी। आई अगेन विश बोथ ऑफ़ देम हैप्पी 25वीं मैरेज एनिवर्सरी।”

(समारोह स्थल तालियों की गडगडाहट से गूँज उठा था)

मैग्नोलिया (हँसते हुए)- “त्रिलोकी माई रोल इज नाउ ओवर, मे आई गो डाउन?”

त्रिलोकी (हँसते हुए)- “नो-नो... मैग्नोलिया जस्ट वेट प्लीज, अभी और बचे सत्रह वर्ष की कहानी भी जान लो। (मैग्नोलिया एक बार पुनः वेडिंग चेयर पर जाकर बैठ जाती हैं।)

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटल मैन, त्रिलोकी जी के शादी के 25 वर्ष में से आठ वर्ष, जो उन्होंने मैग्नोलिया के साथ बिताई, उसे मैंने जस्टिफाई कर दिया है। अब मैं आगे की कहानी आपसबों से शेयर करती हूँ। लन्दन में त्रिलोकी जी की दूसरी पत्नी मार्गेट बनी, जिनके साथ त्रिलोकी जी का सात वर्षों का वैवाहिक सम्बन्ध रहा था।”

(मार्गेट सबों का अभिवादन स्वीकार करते हुये)

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटल मैन, मार्गेट, त्रिलोकी जी के हर एक ख्वाहिश को पूरा जरूर करती थीं। परन्तु एक बार, उन्हें संशय की स्थिति में जरूर डाल देतीं थी। अपनी, इन्हीं आदत को बरकरार रखते हुये, इन्होंने, इंडिया आने से मना करने के बावजूद, यहाँ उपस्थित हुई हैं। आइये, उनका स्वागत, जोरदार तालियों से करते हैं।”

(समारोह स्थल तालियों की गडगडाहट से गूँज उठता है)

(अनु ने मार्गेट का गले में पुष्पमाला डाला और दोनों गले मिले। त्रिलोकी ने, उन्हें एक महंगी गिफ्ट भेंट कर स्वागत किया, मार्गेट ने दोनों को एक बुके और एक इन्वेलप भेंट किया।)

विनोद- “त्रिलोकी भाई, मार्गेट के साथ सात वर्ष का कीमती वक्त बिताने के बाद, इन्वेलप में विदेश से आया हुआ सरप्राइज गिफ्ट क्या है? जरा, हमसब भी तो जानो।”

मार्गेट- “यस, त्रिलोकी, प्लीज ओपन इन्वेलप, पीपुल वांट्स टू नो माई सरप्राइज गिफ्ट।”

त्रिलोकी लिफाफे से पत्र और दो एयर टिकट निकालते हुए पत्र में लिखा था-

“त्रिलोकी, माई लवली हैंड्सम पास्ट ड्रीम हरबैंड,

आई लाइक हंड्रेड परसेंट योर दिस कंसेप्ट ऑफ़ सिल्वर जुबली सेलिब्रेशन। आई विल ट्राई टू डेवेलप योर दिस कंसेप्ट ऑफ़

सिल्वर जुबली सेलिब्रेशन इन माई कंट्री लन्दन। मैं भी, अपनी मैरेज की सिल्वर जुबली मार्च महीने में सेलिब्रेट करने जा रही हूँ। चूँकि, मेरे इस 25 वर्ष के मैरेज लाइफ में सात वर्ष का योगदान, त्रिलोकी तुम्हारा भी है, आई एम गिफ्टिंग यू टू एयर टिकट, यू प्लीज कम माई कंट्री विथ योर वाइफ अनु ऑन माई सिल्वर जुबली सेलिब्रेशन, थैंक यू”

योर एक्स वाइफ एंड फ्रेंड मार्गैट”

(समारोह स्थल तालियों की गडगडाहट से गूँज उठा था)

अनु (हँसते हुए)- “जानू, तुमने, अपने अमेरिकन फ्रेंड मैग्नोलिया और लन्दन वाली फ्रेंड मार्गैट से अपने रिश्ते के बारे में, मुझे, शादी के पहले बताया तो था, परन्तु, इस तरह जोड़-घटाव कर के, तुम शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट करोगे, मुझे इसका जरा भी आभास नहीं था”

त्रिलोकी- “सॉरी अनु...”

अनु (हँसते हुए)- “तुम, अपनी पहली शादी मैग्नोलिया से 18 नवम्बर को किये थे, इसलिय, तुमने मेरे लाख मना करने के वाबजूद, आपने शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेशन की तारीख 18 नवम्बर को रखा”

त्रिलोकी- “अनु, एक तो हमारी-तुम्हारी शादी के 25वीं सालगिरह के वक्त मेरी उम्र बहत्तर वर्ष हो जाती। दूसरी जैसा तुम जानती हो, मैं हमेशा से इनोवेटिव आईडिया के साथ जीने वाला व्यक्ति हूँ तुम्हें, मेरे इस अंदाज से जरा भी तकलीफ हुई है, तो प्लीज मुझे माफ़ कर देना”

अनु (हँसते हुए)- वह तो, मैं, तुम्हें घर चलकर बताऊंगी। वैसे मैंने भी तुम्हारी शादी की 25वीं सालगिरह खूब एन्जॉय किया। मैंने अपनी शादी की 10वीं सालगिरह मनाया और तुमने, अपनी शादी की 25 वीं सालगिरह। मेरे, तरफ से भी तुम्हें, तुम्हारी शादी की 25वीं सालगिरह की बहुत-बहुत बधाई...

त्रिलोकी- “थैंक यू, थैंक यू... और तुम्हें भी”

अनु- “परन्तु जानू, आज तुम्हें, हमसे एक वादा करना होगा कि शादी की 50वीं सालगिरह, तुम बिना कोई मिलावट के मेरे साथ मनाओगे.....”

(सभी हंसते हैं)

त्रिलोकी- “अनु, मैं तुमसे वादा करता हूँ। शादी की 50वीं सालगिरह में, केवल हम दोनों ही होंगे। कोई जोड़-घटाव नहीं होगी। मैग्नोलिया ने भी हम दोनों के शादी की 50वां सालगिरह पर हम दोनों को ही साथ होने का विश किया है।”

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटल मैन, त्रिलोकी जी, अपनी तीसरी पत्नी अनु, जो भारतीय हैं, जिनके साथ पिछले 10 वर्षों से त्रिलोकी जी, अपना सुखमय वैवाहिक जीवन बिता रहे हैं, जिनसे, आप सभी परिचित हैं। अब त्रिलोकी जी, उन्हें सालगिरह का पुष्पमाला पहनाएंगे और बदले में अनु जी भी त्रिलोकी जी के गले में पुष्पमाला पहनायेंगी।”

(दोनों ने एक दूसरे को पुष्पमाला पहनाया, इस अनोखी 25वीं सालगिरह के आयोजन से, समारोह स्थल तालियों की गडगडाहट से गूँज उठा।)

विनोद- “सिद्धी की मम्मी.. चलो हमलोग भी त्रिलोकी भाई को शादी की 25वीं सालगिरह की बधाई और अपना गिफ्ट भेंट कर आते हैं।”

विनोद की पत्नी- “हाँ जी, चलो चलकर बधाई दे आते हैं। अबतक तो इस शादी की 25वीं सालगिरह को लेकर, तुम्हारे सारे कंप्यूजन दूर हो गये होंगे?”

विनोद- “त्रिलोकी भाई एक बड़ा वाला कोन्ग्रेचूलेशान तुम्हें मेरी तरह से इस अनोखी शादी की 25वीं सालगिरह के लियो। हमारे तरफ से एक छोटा-सा गिफ्ट स्वीकार करो।”

त्रिलोकी- “थैंक यू विनोद थैंक यू”

विनोद की पत्नी- “बधाई हो त्रिलोकी जी आपको और अनु तुम्हें भी शादी की 25वीं सालगिरह। अनु बहन, तुम्हारे दरभंगा वाले टकला जीजा जी को कहीं दिख नहीं रहे हैं। कितने अच्छे हैं तुम्हारे दरभंगा वाले टकला जीजा जी। पिछली बार उनसे मिली थी उन्होंने तो हंसा-हंसा कर पागल ही बना दिया था।”

त्रिलोकी (हँसते हुए)- “और हाँ, जब विनोद भाई ने दरभंगा वाले टकला जीजा जी की अच्छी तरह से क्लास लिया तभी से जीजा जी का इधर आना-जाना बंद हो गया।”

विनोद की पत्नी (हँसते हुए)- “आप भी न त्रिलोकी भाई..., हाँ, त्रिलोकी भाई, मैं आपसे एक बात कहना चाहती हूँ। अब आप इस देश को छोड़कर, किसी दूसरे देश को मत जाईयेगा। जिन दो देशों का आपने भ्रमण किया है। दोनों जगह से आप कुराफात कर के आये हैं। कहा भी जाता है- सारे जहाँ से अच्छा हिंदुस्तान हमारा, हिंदुस्तान हमारा...”

त्रिलोकी (हँसते हुए)- “भाभी जी मैं आपसे वादा करता हूँ।”

विनोद की पत्नी (हँसते हुए)- “मुझसे नहीं अनु से वादा कीजिये। ये लीजिये मेरी तरफ से आप दोनों को एक सुन्दर सा गिफ्ट ‘मैगनेट से बनी भगवान की प्रतिमा’ है (एक मैगनेट से बनी भगवान की प्रतिमा भेंट करते हुए)। अब आप दोनों इनके

कृपा से सात जन्मों तक एक दूसरे से चिपके रहेंगे।

त्रिलोकी (हँसते हुए)- “सचमूच भाभी जी।”

(एक बार पुनः हँसी के ठहाके से पूरा हॉल गूँज उठा है)

मार्गेट- “त्रिलोकी, व्हाट सरप्राइज गिफ्ट गिवेन बाई योर फ्रेंड विनोद?”

अनु ने गिफ्ट पैक खोला- “वाह कैलकुलेटर, इतना सुन्दर कैलकुलेटर! लेकिन, विनोद जी, मैं इस गिफ्ट का मतलब नहीं समझी?”

त्रिलोकी- “भाई, विनोद, इतने महंगे कैलकुलेटर गिफ्ट करने का मतलब क्या है? यहाँ, उपस्थित सभी लोग जानना चाहते हैं।”

विनोद (हँसते हुए)- “गुरु त्रिलोकी, तू तो बहुत बड़ा गुरु निकला। तेरे इस शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेशन का हिसाब-किताब सही है न? इस दौरान तुम्हारे कहीं और छिट-पुट सम्बन्ध.....आई मीन....., तुम्हारे वैवाहिक जीवन की एक्यूरेसी को ठीक रखने की मकसद से ही, मैंने, तुम्हें यह सुन्दर-सा कैलकुलेटर गिफ्ट किया है।”

(एक बार पुनः हंसी के ठहाके से पूरा हॉल गूँज उठा है)

अनु (हँसते हुए)- “विनोद जी, थैंक्स फॉर दिस गिफ्ट, परन्तु

अब, हम दोनों को इस कैलकुलेटर की जरूरत नहीं पड़ेगी।

विनोद (हँसते हुए)- “मैं, और उपस्थित सभी लोग भी ऐसा ही चाहते हैं।”

(उपस्थित लोग हँसने लगते हैं)

पहलवान भाई (हँसते हुए)- “अभी-भी लोग, इस अनोखी शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेशन के हिसाब-किताब को ठीक से नहीं समझ पाये हैं। पुनः एक बार समझाया जाए?”

अनाउंसर- “लेडिज एंड जेंटल मैन..., त्रिलोकी जी के शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेशन का हिसाब-किताब मैं पुनः आपको समझाती हूँ। त्रिलोकी जी ने, अपने अबतक के 25 वर्ष के

वैवाहिक जीवन को तीन भाग में जीया है, प्रथम भाग में मैग्नोलिया से शादी कर आठ वर्ष का वैवाहिक जीवन, उसके बाद मार्गेट के साथ सात वर्ष और शेष अबतक अनु जी के साथ 10 वर्ष का वैवाहिक जीवन। इस प्रकार, इस धरती पर त्रिलोकी जी का 25 वर्ष का वैवाहिक जीवन पूरा हुआ।”

पहलवान भाई (हँसते हुए)- “वाह रे शादी की अनोखी 25वीं सालगिरह! इस तरह का मौका सबों को कहाँ मिलता है।”

अनाउंसर (हँसते हुए)- “लेडिज एंड जेंटल मैन..., मैं कई वर्षों से इस प्रोफेशन में हूँ, लेकिन मुझे भी पहली बार इस तरह की अनोखी शादी की 25वीं सालगिरह का प्रेजेंटेशन करने का मौका मिला है, त्रिलोकी जी को मेरी तरफ से विशेष धन्यवाद।”



त्रिलोकी (हाथ जोड़े)- “मैं, आप सबों का इस शादी की अनोखी 25वीं सालगिरह में शामिल होने के लिये हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, विशेष रूप से, मैग्नोलिया और मार्गेट के साथ बिताये गये खूबसूरत आठ वर्ष और सात वर्ष, जो, मुझे आज भी रोमांचित कर जाता है, जिसे मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता। आप, हमारे जीवन में बहुत मायने रखती हैं, आप हमेशा खुश रहें। आपकी उपस्थिति ने इस शादी की 25वीं सालगिरह को जस्टिफाई कर दिया है। थैंक यू, थैंक यू... और मेरे तरफ

से एक विशेष थैंक यू माई स्वीट हार्ट अनु को, जिसने मेरे जीवन को खूबसूरत बना दिया है, जिनके सहयोग से ही मात्र 10 वर्ष के इनके साथ का वैवाहिक जीवन के बाद, मैं अपनी शादी की 25वीं सालगिरह सेलिब्रेट कर पा रहा हूँ, आई लव यू अनु, थैंक यू... थैंक यू।”

(समारोह स्थल तालियों की गड़गड़ाहट से गूँज उठा है)

(चारो खड़े होकर शादी की इस अनोखी 25वीं सालगिरह की याद में फोटो खिंचवाते हैं और गाने के धुन पर थिरकने लगते हैं.....)



प्रशंसा पत्र

● प्रारम्भिक लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
परिषद भवन
ट्रेजरी बिल्डिंग, 2, गवर्नट प्लेस (परिषद),
कोलकाता - 700 001



INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
TREASURY BUILDINGS, 2, GOVT. PLACE (WEST),
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax: (033) 2213-3174
e-mail : agwestbengal1@icag.gov.in

मं. हिंदी कमांडिंग ऑफिस/प्राचीन/47
दिनांक: 30.05.2024

सेवा में,

हिंदी अधिकारी
महालेखाकार (लेखापरीक्षा) झारखण्ड का कार्यालय
रांची - 834002

विषय:- गृह पत्रिका "उदवाचन" (ई-पत्रिका) के 40वें अंक की प्राप्ति संबंधी।

महोदय,

आपके कार्यालय का पत्रांक- रा.भा.अनु./ले.प./उदवाचन/2024-25/35, दिनांक 15.05.2024 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "उदवाचन" (ई-पत्रिका) के 40वें अंक की प्राप्ति हुई। धन्यवाद पत्रिका का आचरण पृष्ठ मुद्रण एवं आकर्षक है। "उदवाचन" में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसायोग्य एवं जानकारीपूर्ण हैं। विशेष रूप से श्री मनोज कुमार की रचना "बर्तमान में 'उद्यान' की प्रशंसा", श्री बालमुकुन्द पाठक की रचना "हिंदी भाषा और संस्कृत विवेचना", श्री सुबोध कुमार की रचना "बंगाल-3", श्रीमती अरुणी पाठक की रचना "सोच-उपार्जित मराठी" आदि हैं। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान लेखापरीक्षा (केंद्रीय), लखनऊ



INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of the Principal Director of Audit (Central) Lucknow

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ राजभाषा अनुसंधान
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड
रांची, 834002

विषय:- हिंदी गृह पत्रिका "उदवाचन" के 40वें अंक की ई-प्रति - के संचालन में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका "उदवाचन" के 40वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई है। पत्रिका का स्वरूप (पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सुप्रचारण उपलब्ध हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास उचित समझाया जाता है।

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं सुंदर स्वरूप के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाहित काल्पनिक रचना "लौकिक कदमों में बहने वाली रचना", "कई आने वाले हैं" एवं "हम बूढ़ों को अपने मां की गोद" बहुत ही रोचक एवं उत्प्रेरक के साथ साथ वास्तविक जीवन पर आधारित हैं। पत्रिका में समाहित अन्य सभी रचनाएँ अच्छी प्रकार, उत्प्रेरक एवं प्रभावशाली हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं संचालक के धार्मिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Signed by Rajesh Kumar
Swyambhu
Date: 03-05-2024 16:19:03
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्राचीन

पूरीत लाल, सीट नंबर, सी-सी-35-वी-1, विभूति खान, गोमि नगर, लखनऊ-226010 (उ.प्र.) दूरभाष: 0522-2970789, फ़ैक्स: 0522-2970780 (र.प्र.)
3rd Floor, Audit Bhawan, T.C.-35-V-1, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow-226010 (U.P.) Phone: 0522-2970789, Fax: 0522-2970780 (FD)



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I),
परिषद भवन
ट्रेजरी बिल्डिंग, 2, गवर्नट प्लेस (परिषद),
कोलकाता - 700 001



सं.स्थ./XIII(14)/सिद्धि पत्रिका/प्रमाण-III/2023-24/

दिनांक:

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा अनुसंधान
महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड का कार्यालय
रांची

विषय: गृह पत्रिका "उदवाचन" के 40वें अंक (संयुक्त) की ई-प्रति की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय के संदर्भ में आपके कार्यालय पर ईमेल दिनांक: 15.05.2024 को संचालन में है। इस संबंध में आपके कार्यालय से गृह पत्रिका "उदवाचन" के 40वें अंक (संयुक्त) की ई-प्रति प्राप्त हुई, जिसके लिए यह कार्यालय आपके आभारी है।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं जानकारीपूर्ण एवं प्रशंसायोग्य हैं। "बर्तमान में 'उद्यान' की प्रशंसा", "एक व्यंग्य-वैचार लौकिक", "स्टेट्स का स्टेट्स", "जनजातियों के समग्र विकास की संकल्पना", "अभिव्यक्ति" आदि रचनाएं विशेष रूप से पठनीय एवं उत्प्रेरक हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रमाण
Signed by Sudeb Sikder
Date: 01-07-2024 16:22:15



प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) का कार्यालय, केरल, तिरुवनंतपुरम
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II),
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695 001



मं.ले.प./हिंदी कमांडिंग ऑफिस/2024-25

दिनांक: 07.06.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/राजभाषा अनुसंधान
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
झारखण्ड, रांची - 834002

विषय:- पत्रिका की प्राप्ति - बावजूद

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "उदवाचन" के 40वें अंक (संयुक्त) अनुसंधान 2022 - मार्च 2023 की प्राप्ति प्राप्त हुई, महत्वपूर्ण धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ रोचक, प्रशंसायोग्य एवं जानकारीपूर्ण हैं।

पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ रोचक, प्रशंसायोग्य एवं जानकारीपूर्ण हैं। विशेष रूप से, श्री मनोज कुमार द्वारा रचित लेख "बर्तमान में 'उद्यान' की प्रशंसा" तथा श्री विमलेश कुमार द्वारा रचित पत्रिका "मनोमोहरी" आदि हैं। पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं शुभकामनाएँ।

भवदीय,

Signed by Susheela P V
Date: 07-06-2024 12:13:38

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कमांडिंग



सेवानिवृत्त कर्मियों के साथ सभी समूह अधिकारी



उप महालेखाकार (एमजी-II) द्वारा हिंदी कार्यशाला में कंठस्थ 2.0 पर व्याख्यान



हिंदी कार्यशाला में संबोधन करते हुए हिंदी अधिकारी



हिंदी कार्यशाला में संबोधन करते हुए अतिथि हिंदी अधिकारी



हिंदी कार्यशाला में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी



हिंदी कार्यशाला में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी



राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक



राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक